

8 71061

405

मंत्री, पंडित परिषद्, प्रयाग

स्त्री प्रकाशन

बहादुरगंज, इलाहाबाद

डमी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद

मो० - ९४१५३६५७५९

॥ अथ शतचण्डी ॥

- कर्मकाण्ड में चंडी, सपिण्डी, कुशकण्डी अर्थात् शतचण्डी, सपिण्डन श्राद्ध एवं कुशकण्डिका तीनों विषय मत-मतान्तरों के कारण अत्यन्त उलझे हुए हैं।
- कर्मकाण्ड विषयक ग्रन्थों में कोई स्पष्ट निर्देश नहीं है।
- शतचण्डी, सहस्रचण्डी का विशेष उल्लेख "अनुष्ठान प्रकाश" में ही प्राप्त है किन्तु अनेक ग्रन्थों के मतों का उल्लेख किया गया है जिससे क्रमबद्ध विधि से शतचण्डी करा पाना सामान्य पंडितों के लिए कठिन हो जाता है।
- अभी तक शतचण्डी प्रयोग विधि की सांगोपांग कोई पद्धति भी प्रकाश में नहीं आयी है, जिसकी वजह से जो जैसे चाहता है, करा रहा है।
- इधर बहुत दिनों से एक सांगोपांग "शतचण्डी प्रयोग पद्धति" की अपेक्षा मुझसे की जा रही थी।
- मैं इस विषय का कोई विशेष ज्ञाता नहीं हूँ, अतः काशी, जयपुर, चुरु आदि अनेक क्षेत्रों में जा-जाकर वहाँ की प्रक्रियाओं को देखता-पूछता रहा।
- इसी सन्दर्भ में अनेक ग्रन्थों तथा स्थानीय प्रक्रियाओं को भी पढ़ने-देखने का अवसर मिला।
- अनुष्ठान प्रकाश में पाँच आवरण का उल्लेख है, किन्तु पूजा कर्म प्रदीप में नव आवरण की विधि लिखी है।

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

- अनुष्ठान प्रकाश के अनुसार दुर्गासप्तशती के एक सौ साधारण पाठ को ही “शतचण्डी” कहा गया है, जो ४ दिन में प्रथम दिन १, द्वितीय दिन २, तृतीय दिन ३, चतुर्थ दिन ४ पाठ १-१ ब्राह्मण को करना चाहिए। इस पाठ में दस ब्राह्मण रहते हैं। ४ दिन में १०० पाठ पूरा होगा। पाँचवें दिन होम होगा।
- किन्तु आजकल किसी विशेष मंत्र से सम्पुट लगाकर सप्तशती पाठ करने-कराने की रीति चल पड़ी है। एक दिन में एक ब्राह्मण चार सम्पुट नहीं कर सकता, अतः पंडित लोग अपने विवेक से ७ या ९ दिन में एक सौ पाठ पूरा करते हैं।
- पाठ का एक और भी भेद “अखण्ड पाठ” देखने को मिला है, जिसमें २-२ पंडित पारी-पारी से १-१ पाठ करते हैं। २४ घंटे में २० पाठ होता है। ५ दिन में एक सौ पाठ पूरा हो जाता है। यह भी एक विधि है।
- शास्त्रों में मंडप बनाकर मंडप पूजन आदि प्रक्रिया पूरी कर मंडप के भीतर पाठ करने की विधि दी गयी है। कुछ लोग यज्ञीय मंडप बनाते हैं। कुछ लोग छाया मंडप बनाते हैं।
- १६ खम्भे का मंडप होना चाहिए। एक हाथ ऊँची वेदी होनी चाहिए। पाँच रंग से मंडप बनाना चाहिए।

- एक आचार्य तथा दस ऋत्विज होना चाहिए।
- मंडप, वेदी, ध्वजा, तोरण, कुंड आदि बनाना चाहिए।
- आज कल प्रायः घर में किसी बड़े कमरे या हाल में ही वेदी बना कर गृहस्थ जन शतचण्डी कराते हैं।
- शास्त्र के अनुसार १ हाथ लम्बी-चौड़ी ४ अंगुल ऊँची ग्रहवेदी, अग्निकोण में मातृका पीठ, नैऋत्य में ८१ पद का वास्तुपीठ, वायव्य में योगिनी पीठ तथा क्षेत्रपाल मध्य में सर्वतोभद्र-देवी पीठ होनी चाहिए।
- जवा बोने का (अंकुरारोपण) का भी विधान है।
- शास्त्रों में २ से १० वर्ष की नव कन्या तथा ३ बटुक की पूजा प्रतिदिन करने को लिखा है।
- यदि कन्या का अभाव हो तो २ वर्ष की ही कन्या का पूजन करे। कहीं-कहीं १ ही बटुक की पूजा की जाती है।
- राजस्थान में शैलपुत्री आदि नव दुर्गा की भी स्थापना-पूजा की जाती है। एक सफेद कपड़े पर ९ जगह अक्षतपुंज रखकर नव दुर्गा का पूजन किया जाता है।
- मध्यप्रदेश में कन्याओं के अभाव में कुश कन्या बनाकर यह प्रक्रिया पूरी की जाती है। एक

- पत्रासन (पत्तल) पर कुशा के अग्रभाग में गांठ लगाकर नव कन्याओं का तथा तीन कुशा में गांठ लगाकर तीन वटुक की स्थापना-पूजा की जाती है।
- हवन में भी बड़ा मत-मतान्तर है। जैसे -
- अनुष्ठान प्रकाश में लिखा है, कवच के मंत्रों से तथा सप्तशती के चतुर्थ अध्याय के (१) शूलेन पाहिनोदेवि (२) प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च .. (३) सौम्यानि यानि रूपाणि ... (४) खड्ग शूल गदादीनि ... इन चार मंत्रों से आहुति नहीं देनी चाहिए।
- पूजा कर्म प्रदीप में - प्रथम अध्याय के (१) खड्गिनी शूलिनी से लेकर सोऽपि निद्रावशं नीतः ... तक पांच मंत्रों से आहुति का निषेध लिखा है।
- पूजा कर्म प्रदीप में यह भी लिखा है, चतुर्थ अध्याय के प्रथम मंत्र से लेकर खड्ग शूलगदादीनि - तक के मंत्रों से हलुवा और खीर से आहुति देनी चाहिए।
- पूजाकर्म प्रदीप में शूलेन पाहिनो देवि - इन चारों मंत्रों से खीर-हलुवा का हवन करने को लिखा है।
- कुछ लोग कीलक, अर्गला तथा रहस्य त्रय से भी आहुति का निषेध करते हैं।
- हवन में अनेक वस्तुओं का समावेश है। सामान्यतः जवा-तिल-चावल, शक्कर, घी, मेवा,

- गुरिच, दूब, खीर का हवन होता है।
- कुछ लोग जवा की मात्रा अधिक रखते हैं, कुछ तिल की मात्रा अधिक रखते हैं। जवा-तिल-चावल की मात्राओं में पर्याप्त मतभेद है।
- इन मत-मतान्तरों का निर्णय करना सम्भव नहीं है। मेरा यह विधेय भी नहीं है।
- मेरा मात्र इतना ही विधेय है, शास्त्र विहित तथा लोक प्रचलित प्रक्रियाओं के आधार पर एक ऐसी पद्धति तैयार करना है जिसके आधार पर सामान्य पुरोहित-पण्डित भी सरलता से "शतचण्डी" करा सकें। मैंने यही प्रयत्न इस पद्धति में किया है, आप पृष्ठ पलटते जायं, कार्य कराते जायं। कहीं किसी प्रकार का अटकाव नहीं हो। मुझे अपने प्रयत्न में कहाँ तक कितनी सफलता मिल सकी है, इसका निर्णय तो पुरोहितवर्ग-पण्डित वर्ग ही कर सकेगा।
- इतना अनुरोध अवश्य है, कहीं कोई सुधार अपेक्षित है तो मुझे अवश्य बताने की कृपा करेंगे।

वशंवद
श्रीधर शास्त्री

पूजन-प्रारम्भ

- पूर्व मुख बैठकर पूजन प्रारम्भ करें
- कुशा या आम्रपल्लव से अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर जल छिड़कें - मंत्र
॥ ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरी काक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
- तीन बार आचमन करें -
॥ ओम् नारायणाय नमः॥ ओम् केशवाय नमः॥ ओम् माधवाय नमः॥
- हाथ धो लें -
॥ ओम् हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु॥
- पवित्री (पैती) पहनें - निम्न मंत्र पढ़ते रहें -
॥ ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत् पुनाम्यच् छिद्रेण पवित्रेण
सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छक्रेयम्।

- हाथ में अक्षत पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन करें -
ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्ध्यासो अपरीता स उद्भिदः। देवा नो
यथा सद मिद् वृधे असन्न प्रा युवो रक्षितारो दिवे दिवे। देवानां भद्रा
सुमतिरऋजूयताम् देवानां ॐ राति रभि नो निवर्ताम्। देवानां ॐ सख्यमुपसे
दिमावयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे। तान् पूर्वया निविदाहू महे वयं भगं
मित्र मदितिम् दक्ष मस्त्रिधम्। अर्यमणं वरूण ॐ सोममश्विना सरस्वती नः
सुभगा मयस्करत्। तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन् तन्माता पृथिवी तत् पिता
द्यौः तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतन् धिष्ण्या युवम्।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियन् जिन्व मवसे हू महे वयम्। पूषानो यथा
वेद सा मसदवृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये। स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः
पूषा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर् दधातु।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथे शु जगमयः। अग्नि जिह्वा
मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवा अवसा गमन्निह। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम् देवा

भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः स्थिरै रंगैस्तुष्टवा ॐ सस्तनू भिव्यशेमहि देवहितं
यदायुः। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रा सो यत्र
पितरो भवन्ति मानो मध्यारी रिषता युर्गन्तोः। अदितिर्द्यौरदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता
सपिता सपुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजनाअदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्। द्यौः
शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ॐ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः
सामाशान्तिरेधि। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः
पशुभ्यः। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।
ओम् शान्तिः। शान्तिः। शान्तिः। सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु॥

ॐ हाथ का अक्षत-पुष्प अपने सामने पृथिवी पर छोड़ दे -

ॐ दूसरा अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करें -

ओम् सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये॥४॥
अभीप्सितार्थं सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥५॥
सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥६॥
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः॥७॥

तदेवलग्नं सुदिनं तदेव, तारावलं चन्द्रवलं तदेव।
 विद्यावलं दैववलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽडिघ्न युगस्मरामि॥
 लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
 येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥१॥
 वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ।
 निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥१०॥
 यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
 तत्रश्री विजयो भूतिर्धुवानीति र्मतिर्मम॥११॥
 अनन्याश् चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
 तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥१२॥
 स्मृतेः सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते।
 पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥१३॥

सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस् त्रिभुवनेश्वराः।
 देवाः दिशन्तु नः सिद्धिम् ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥१४॥
 श्रीमन्महा गणाधिपतये नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ओम्
 लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। शची पुरन्दराभ्यां नमः।
 मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः।
 वास्तुदेवेभ्योनमः। स्थानदेवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।
 सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः॥

○ हाथका अक्षत-पुष्प पृथिवी पर छोड़ दे -

○ कुश-अक्षत-जल-पुष्प-द्रव्य लेकर संकल्प करे -

हरिः ओम् तत् सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मने
 श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणोऽहि द्वितीय पराङ्गे
 श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे-अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे
 कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डस्य आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तक देशे पुण्यक्षेत्रे

विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे यथायनेसूर्ये यथाऋतौ च महामांगल्यप्रदे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे यथानक्षत्रे यथाराशिस्थितेसूर्ये यथा-यथा-राशिस्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथालग्नमुहूर्त योग करणान्वितायाम् - एवं ग्रहगुणविशेषणविशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् स्वकीय जन्मलग्नतो वा दुस्स्थानगत ग्रहजन्यसकलारिष्ट निवृत्त्यर्थम्-उत्पन्न-उत्पत्त्यमान-अखिलारिष्ट निवृत्तये दीर्घायुष्य सततारोग्यतावाप्तये धन-धान्य समृद्धयर्थम्-च-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विध पुरुषार्थ प्राप्त्यर्थम्-च-धन-धान्य-पुत्रपौत्रादि-अनवच्छिन्न सत्संगतिलाभार्थम्-शत्रुपराजय-बहुकीर्त्यादि- अनेकानेक-अभ्युदय- फल प्राप्त्यर्थम् अमुक कामनासिद्धयर्थम् श्री दुर्गाभगवती प्रीतिकामः शतचण्डीं ब्राह्मण द्वारा कारयिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता पूर्वक समाप्ति हेत्वर्थम् गौरी-गणपति पूजनं तथा च तदंगतया विहितं पुण्याहवाचनं, मातृकापूजनं, नांदीश्राद्धम् - आचार्यवरणं एवं च ग्रहाणां स्थापनं-पूजनं करिष्ये।

- ⊙ संकल्प पढ़कर हाथ का कुश-अक्षत-जल अपने सामने भूमिपर छोड़ दे।
- ⊙ इसके बाद "वेदी पूजन" (लेखक - श्री श्रीधर शास्त्री) के अनुसार
- ⊙ पृथिवी पूजन ⊙ गौरी-गणपति-कलश पूजन
- ⊙ पुण्याहवाचन ⊙ रक्षाभिधान ⊙ आचार्य वरण
- ⊙ षोडश मातृका पूजन ⊙ सप्तस्थल मातृका पूजन
- ⊙ घृतमातृका पूजन ⊙ वसोर्धारा ⊙ आयुष्यमंत्र जप
- ⊙ नान्दीमुख श्राद्ध ⊙ वास्तु पीठ पूजन ⊙ चतुः षष्टि योगिनी पूजन ⊙ नवग्रह पूजन ⊙ अधि-प्रत्यधि पंच लोकपाल - दश दिक्पाल पूजन-सर्वतोभद्र पूजन तथा सर्वतोभद्र के ऊपर ताम्र कलश स्थापित करे।
- ⊙ इतनी प्रक्रिया करने के बाद भगवती दुर्गा देवी की स्वर्ण प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है।

॥ स्वर्ण प्रतिमा-प्राणप्रतिष्ठा-स्थापन-पूजन॥

- ⊙ भगवती दुर्गा की स्वर्ण प्रतिमा को अग्नि में दिखा दे। फिर प्रतिमा में घी लगाकर एक पात्र में



ॐ

अपने सामने भूमि पर रख ले।

प्रतिमा पर जलधारा दे -

ओम् समुद्रस्य त्वाऽवकयाग्ने परिव्ययामसि।

पावको अस्मभ्य ॐ शिवो भव॥१॥

हिमस्य त्वा जरायु णाऽग्ने परिव्ययामसि।

पावको अस्मभ्य ॐ शिवो भव॥२॥

अपामिदं न्ययन ॐ समुद्रस्य निवेशनम्।

अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ॐ शिवो भव॥३॥

नमस्ते हरषे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे।

अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ॐ शिवो भव॥४॥

प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः।

अन्याँस्ते अस्मत् तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ॐ शिवो भव॥५॥

१६



ॐ जलधारा देने के बाद प्रतिमा को पंचगव्य से धो दे -

॥ ओम् पंच गव्यं हिरण्यं तु पवित्रं शुद्धि कारणम्।

अतस्त्वा मभिषिञ्चामि देवाः शुद्ध्यन्ति वै मुदा॥

ॐ पंचगव्य से धोकर शुद्ध जल से धो ले।

ॐ प्रतिमा को अपने बाएँ हाथ में रख ले

ॐ दाहिने हाथ में एक फूल लेकर प्रतिमा स्पर्श करे -

प्राण प्रतिष्ठा करे -

ओम् आम् ह्रीम् क्रौम् यं रं लं वं शं षं सं हं सः

अस्यां मूर्त्तौ प्राणा इह प्राणाः॥१॥

ओम् आम् ह्रीम् क्रौम् यं रं लं वं शं षं सं हं सः

अस्यां मूर्त्तौ जीव इह स्थितः॥२॥

ओम् आम् ह्रीम् क्रौम् यं रं लं वं शं षं सं हं सः

१७



- फूल मूर्ति पर चढ़ा दे॥
॥ देवी की विधिवत् पूजा करे॥

॥ पूजन विधि॥

- एक फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ ओम् महिषघ्नीं महादेवीं कुमारीं सिंह वाहिनीम्।

दानवांस्तर्जयन्तीञ्च सर्वकाम दुघां शिवाम्॥

ध्यायामि मनसा दुर्गाम् नाभिमध्ये व्यवस्थिताम्।

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निपातिनि॥

एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थम् मम सर्वदा।

आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थं सिद्धये॥

- फूल देवी मूर्ति पर चढ़ा दे। ○ दूसरा फूल लेकर आसन दे
॥ ओम् अनेक रत्न संयुक्तं नानामणि गणान्वितम्।

कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

- फूल देवी मूर्ति के आगे चढ़ा दे।
- तीन बार जल देवी जी के सामने उतार कर छोड़ दे -
पाद्य - ॥ गंगादि सर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनया हृतम्।

तोयमेतत् सुखस्पर्शम् पाद्यार्थम् प्रतिगृह्यताम्॥

अर्घ्य - निधीनां सर्वरत्नानां त्वमनर्घ्यं गुणाह्वसि।

सिंहोपरि स्थिते देवि गृहाणार्घ्यम् नमोऽस्तुते॥

आचमन - कपूरैः सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम्।

तोयमाचमनीयार्थम् देवि त्वं प्रतिगृह्यताम्॥

- स्नान के लिए १ बार जल उतार दे -

॥ मन्दाकिन्याः समानीतैर् हेमांभोरुहवासितैः।

स्नानं कुरुष्व देवेशि सलिलैश्च सुगन्धिभिः॥

○ पंचामृत से स्नान कराये -

॥ पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम्॥

○ शुद्ध जल से स्नान

॥ ओम् मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपाप हरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं तुभ्यं स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम्॥

○ वस्त्र चढ़ाए -

॥ ओम् पट्टकूल युगं देवि कञ्चुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गे दुर्गति नाशिनि॥

○ दो बार जल छोड़ दे -

॥ ओम् वस्त्रान्ते जलम् -आचमनीयं समर्पयामि॥

○ चंदन - ॥ ओम् श्रीखंडागरुकस्तूरी सेचनाभि सुसंयुतम्।

२२

गृहाण गन्धं देवेशि सर्वकाम फलप्रदे॥

अक्षत - ॥ ओम् अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणि समन्वितान्।

गृहाणेमान् महादेवि देहि मे निर्मलां धियम्॥

हरिद्राचूर्ण - ॥ हरिद्रारञ्जिते देवि सुख सौभाग्य दायिनि।

तस्मात् त्वं पूजयाम्यत्र सुखं शान्तिं प्रयच्छ मे॥

कुंकुम - ॥ कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनी काम सम्भवम्।

कुंकुमे नार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि॥

सिन्दूर - ॥ सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुम सन्निभम्।

अर्पितं ते मयादेवि प्रसीद परमेश्वरि॥

कज्जल - चक्षुर्भ्याम् कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम्।

कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि॥

२३

शतचण्डी प्रयोग पद्धति
फूलमाला - ॥ पद्म शंखज पुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि गृहाण त्वं सुरेश्वरि॥

फूल - ॥ नाना पुष्प विचित्राढ्यां पुष्पमाला सुशोभनाम्।
प्रयच्छामि सुपुष्पाणि गृहाण त्वं सुरेश्वरि॥

इत्र - ॥ चन्दनागरुकर्पूरं कुंकुमं रोचनं तथा।
कस्तूर्यादि सुगन्धाश्च सर्वाङ्गेषु विलेपयेत्॥

॥ अङ्गपूजा ॥

○ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत देवीमूर्ति के आगे छोड़े।
निम्नवाक्य पढ़ता रहे -

॥ ओम् दुर्गायै नमः। पादौ पूजयामि नमः॥

॥ ओम् महाकाल्यै नमः। गुल्फौ पूजयामि नमः॥

॥ ओम् मंगलायै नमः। जानु द्वयं पूजयामि नमः॥

२४

॥ ओम् कात्यायन्यै नमः। उरुद्वयं पूजयामि नमः॥

॥ ओम् भद्रकाल्यै नमः। कटिं पूजयामि नमः॥

॥ ओम् कमल वासिन्यै नमः। नाभिं पूजयामि नमः॥

॥ ओम् शिवायै नमः। उदरं पूजयामि नमः॥

॥ ओम् क्षमायै नमः। हृदयं पूजयामि नमः॥

॥ ओम् कौमार्यै नमः। स्तनौ पूजयामि नमः॥

॥ ओम् उमायै नमः। हस्तौ पूजयामि नमः॥

॥ ओम् महागौर्यै नमः। दक्षिणबाहुं पूजयामि नमः॥

॥ ओम् वैष्णव्यै नमः। वामबाहुं पूजयामि नमः॥

॥ ओम् रमायै नमः। स्कन्धौ पूजयामि नमः॥

॥ ओम् स्कन्दमात्रे नमः। कण्ठं पूजयामि नमः॥

॥ ओम् महिषमर्दिन्यै नमः। नेत्रे पूजयामि नमः॥

२५

॥ ओम् सिंह वाहिन्यै नमः। मुखं पूजयामि नमः॥

॥ ओम् माहेश्वर्यै नमः। सर्वाङ्गं पूजयामि नमः॥

- हाथ का शेष अक्षत देवीमूर्ति के सामने छोड़ दे।
- फिर से जल, चंदन, अक्षत, फूल देवी मूर्ति को चढ़ा दे।
- हाथ में अक्षत-जल लेकर धूपबत्ती दिखाए -

॥ ओम् गुग्गुलं गन्ध संयुक्तमगर्वादि समायुतम्।
दशांगं गृह्ण धूपं तु भद्रकालि नमोऽस्तुते॥

- हाथ का जल-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दे।
- फिर हाथ में जल-अक्षत लेकर दीप दिखाए -

॥ ओम् साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्य तिमिरापहम्॥

- हाथ का जल-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दे।

- हाथ धोकर नैवेद्य प्रदान करे -

॥ ओम् अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्तिं मे ह्यचलां कुरु॥

- तीन बार जल आचमन हेतु छोड़ दे -

॥ ओम् आचम्यतां त्वया देवि निशुम्भासुर मर्दिनि।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥

- फल ॥ ओम् नाना फलानि दिव्यानि ऋतुकालोद्भवानि च
पूर्णैः फलैश्च सहितान्यम्बेत्वामर्पयाम्यहम्॥

- दो बार जल छोड़ दे

॥ ओम् गन्धतोयं समानीतं पवित्र कलशेस्थितम्।
हस्त प्रक्षालनार्थाय पानीयं ते निवेदये॥

- दोनों हाथ की अनामिका अंगुली में चंदन लगाकर देवीमूर्ति के आगे छोड़ दे -

॥ ओम् करोद्धर्तनकं देवि सुगन्धैः परिवासितैः।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥

○ पान-सुपारी चढ़ा दे -

॥ ओम् एलालवंग कस्तूरी कर्पूरैः पुष्प वासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि॥

○ दक्षिणा चढ़ा दे

॥ ओम् पूजा फल समृद्धयर्थम् तवाग्रे द्रव्यमीश्वरि।
स्थापिता तेन मे प्रीता पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

○ एक फूल लेकर प्रार्थना करे

॥ ओम् नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
मया पुष्पाञ्जलिः दत्त गृहाण परमेश्वरि॥

○ फूल देवीमूर्ति के सामने छोड़ दे

२८

○ दूसरा फूल लेकर हाथ घुमाकर ३ बार प्रदक्षिणा कर ले।

॥ ओम् यानि-कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे॥

○ फूल देवीमूर्ति के सामने छोड़ दे

○ फिर फूल लेकर देवी जी की प्रार्थना करे -

॥ ओम् विद्युद् दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल खेटविलसद्भस्ताभिरा सेविताम्।
हस्तैश्चक्र गदाऽसिखेट विशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गाम् त्रिनेत्रां भजे॥

॥ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुल भयदां मौलिवद्धेन्दुरेखाम्।
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्धहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंह स्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसापूरयन्तीम्।
ध्यायेद् दुर्गाम् जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः॥

२९



शतचण्डी प्रयोग पद्धति



॥ अनया पूजया भगवती श्री दुर्गादेवी प्रीयताम् ॥

- फूल देवीमूर्ति के आगे चढ़ा दे ॥

॥ आवरण पूजा ॥

- एक हाथ लम्बे-चौड़े लाल कपड़े पर अष्टगन्ध अथवा केशर से सप्तशती यंत्र लिखे (पहले से लिखकर तैयार रखे) इस समय पूजा करने के निमित्त अपने सामने किसी पात्र या पत्तल पर रख ले ॥

॥ अथवा ॥

ताम्रपत्र में सप्तशती यंत्र बनवा ले। इस समय उसे अपने सामने किसी पात्र या पत्तल पर रखकर पूजा करे।

॥ पूजन विधि इस प्रकार है -

- दाहिने हाथ में कुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे -

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक नामाऽहम् करिष्यमाण शतचण्डी पाठांगतया श्री भगवती दुर्गा देवी प्रीत्यर्थे आवरण पूजां करिष्ये ॥

३०



शतचण्डी प्रयोग पद्धति



- संकल्प पढ़कर हाथ का कुश-अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दे।
- यदि ताम्र पत्र में यंत्र बनाया गया है, तो यथाविधि "अग्नि उत्तारण" प्रक्रिया करनी चाहिए। उसके बाद आवाहन-पूजन करे।

(अग्नि उत्तारण प्रक्रिया वेदीपूजन पद्धति से करे)

- यदि लाल कपड़े पर यंत्र बनाया है, तो अग्नि-उत्तारण विधि नहीं होगी। आवाहन-पूजन से प्रक्रिया प्रारम्भ होगी।

- एक फूल लेकर ध्यान करे -

॥ ओम् सिंहस्था शशि शेखरा मरकत प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः।

शंखं चक्र धनुः शराँश्च दधती नेत्रैस् त्रिभिः शोभिता ॥

आमुक्तां गद हारकंकण रणत् काञ्चीरणन् नूपुरा।

दुर्गा दुर्गति हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत् कुण्डला ॥

- फूल यन्त्र पर चढ़ा दे

३१

॥ अथ प्रथम आवरण पूजन ॥

- ० दूसरा फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ ओम् संचिन् मयपरे देवि परामृतचरूप्रिये।
अनुज्ञां देहि मे मातः परिवारार्चनाय ते ॥

जगद्धात्री जगद्वन्द्ये त्रिदशैरभिपूजिते।

अनुज्ञां देहि मे देवि परिवारार्चनाय ते ॥

विश्वेशि करुणामूर्त्ते भक्तानुग्रहकारिके।

अनुज्ञां देहि भो देवि परिवारार्चनाय मे।

- ० फूल यंत्र के सामने छोड़ दे
- ० फिर यंत्र के सामने तीन बार जल छोड़ दे
- ० गन्ध - अक्षत - पुष्प चढ़ा दे
- ० दाहिने हाथ में जल लेकर कहे -

॥ ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै
सायुधायै सशक्तिकायै श्री महाकाल्यै नमः। श्रीमहाकाली पादुकां पूजयामि,
तर्पयामि ॥

- ० पढ़कर हाथ का जल यंत्र के सामने छोड़ दे।
- ० फिर हाथ में जल लेकर पढ़े -

॥ ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै
सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहालक्ष्मीपादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥

- ० हाथ का जल यंत्र के सामने छोड़ दे।
- ० फिर तीसरी बार हाथ में जल लेकर पढ़े -

॥ ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् चामुण्डायै विच्चे साङ्गायै सपरिवारायै सावरणायै
सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहासरस्वत्यै नमः। श्री महासरस्वती पादुकां
पूजयामि-तर्पयामि ॥

- हाथ का जल यंत्र के सामने छोड़ दे।
- बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत यंत्र पर बीच में बने बिन्दु के चारों ओर छोड़े। पढ़े -

ओम् ह्रीम् गुरुवे नमः। गुरुमावाहयामि॥१॥

ओम् ह्रीम् परमगुरुवे नमः। परम गुरुमावाहयामि॥२॥

ओम् ह्रीम् परात्परगुरुवे नमः। परात्पर गुरुमावाहयामि॥३॥

ओम् ह्रीम् परमेष्ठिगुरुवे नमः। तमावाहयामि॥४॥

- चार बार गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़ दे।
- फिर चार बार हाथ में जल ले-लेकर क्रमशः निम्नवाक्य पढ़-पढ़कर हाथ का जल यंत्र के सामने छोड़े -

ओम् ह्रीम् गुरुवे नमः। गुरु शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१॥

ओम् ह्रीम् परमगुरुवे नमः। परमगुरु शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२॥

ओम् ह्रीम् परात्पर गुरुवे नमः। परात्पर गुरु शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥३॥

ओम् ह्रीम् परमेष्ठिगुरुवे नमः। परमेष्ठि गुरु शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥४॥

- इसके बाद बाएँ हाथ में अक्षत लेकर २-२ दाना अक्षत दाहिने हाथ से बिन्दु के चारों ओर छोड़े - निम्नवाक्य पढ़े -

अग्निकोण में -

॥ ओम् ऐम्-ह्रीम् क्लीम् हृदयाय नमः॥१॥

ईशान में -

॥ ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् शिरसे स्वाहा॥२॥

नैऋत्य में -

॥ ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् तद्विच्छिखायै वषट्॥३॥

वायव्यकोण में -

॥ ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् कवचाय हुम्॥४॥

देवी के आगे -

॥ ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् नेत्र त्रयाय वौषट्॥५॥

देवी के चारों ओर -

॥ ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् अस्त्राय फट्॥६॥

- इसके बाद गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर छह अंगों की पूजा कर दे।
- पूजन के बाद क्रमशः छह बार हाथ में जल लेकर निम्न वाक्य पढ़-पढ़ कर यंत्र के सामने

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

छोड़े-

ओम् ह्रीम् ऐम् हृदयाय नमः। हृदयशक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१॥

ओम् ह्रीम् शिरसे नमः। शिरः शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२॥

ओम् ह्रीम् क्लीम् शिखायै नमः। शिखाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥३॥

ओम् ह्रीम् चामुण्डायै कवचाय नमः। कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥४॥

ओम् विच्चे नेत्रत्रयाय नमः। नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥५॥

ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् चामुण्डायै विच्चे नमः॥

अस्त्रशक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥६॥

○ फिर हाथ में जल लेकर कहे -

॥ ओम् एताः प्रथमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः ३६

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

पूजितास्तर्पिताः सन्तु॥ अनेन पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवी प्रीयताम्॥

○ हाथ का जल सामने छोड़ दे।

○ फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ ओम् अभीष्ट सिद्धिम् मे देहि शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

○ फूल देवी के आगे छोड़ दे॥ ॥ इति प्रथम आवरण पूजनम्॥

॥ अथ द्वितीय आवरण पूजन॥

○ इसके बाद त्रिकोण में अपनी ओर से प्रारम्भ कर प्रदक्षिणक्रम से (दाहिनी ओर से प्रारम्भ कर) निम्नलिखित मंत्रों से यथा नाम देवी का आवाहन करे।

○ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर २-२ दाना अक्षत छोड़कर आवाहन करे

ओम् ह्रीम् सावित्र्या सह विधात्रे नमः। विधातृशक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१॥

ओम् ह्रीम् श्रिया सह विष्णावे नमः। विष्णु शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२॥ ३७

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

ओम् ह्रीम् उमया सह शिवाय नमः॥ शिवशक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥३॥

ओम् ह्रीम् क्षुं सिंहाय नमः॥ सिंह शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥४॥

ओम् ह्रीम् हुं महिषाय नमः॥ महिष शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥५॥

॥ द्वितीया वरण देवताभ्यो नमः॥ आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि॥

○ इसके बाद गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर पूजन कर दे

॥ ओम् द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः॥ - कहता रहे।

○ एक पात्र में जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प लेकर अर्घ्य दे -

॥ ओम् एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः-तर्पिताः सन्तु॥

○ उक्त वाक्य पढ़कर यंत्र के सामने अर्घ्य चढ़ा दे।

○ फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ ओम् अभीष्ट सिद्धिम् मे देहि शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥

○ फूल यंत्र के सामने छोड़ दे।

○ दाहिने हाथ में जल लेकर पढ़े, पढ़कर जल देवी के सामने छोड़ दे -

॥ ओम् अनेन द्वितीयावरण देवता पूजनेन - त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवता प्रीयताम्॥

॥ अथ तृतीय-आवरण पूजन॥

○ इसके बाद बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत "षट्कोण" में (अग्नि-ईशानकोण के मध्य से प्रारम्भ कर छोड़ो जगह छोड़कर आवाहन करे -

॥ ओम् ह्रीम् ऐम् नं नन्दजायै नमः॥ नन्दजाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१॥

॥ ओम् ह्रीम् रं रक्त दन्तिकायै नमः॥ रक्त दन्तिका शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२॥

॥ ओम् ह्रीम् क्लीम् शां शाकम्भर्यै नमः॥ शाकम्भरी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥३॥

॥ ओम् ह्रीम् दुं दुर्गायै नमः॥ दुर्गाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥४॥

॥ ओम् ह्रीम् हुं भीं भीमायै नमः॥ भीमाशक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥५॥

॥ ओम् ह्रीम् भ्रां भ्रामर्यै नमः॥ भ्रामरीशक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥६॥

॥ तृतीयावरण देवताभ्यो नमः॥ आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि॥

○ इसके बाद जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़कर इनकी पूजा कर दे।

॥ ओम् एताः तृतीया वरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु ॥

○ फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ ओम् नन्दजा हेमगर्भाभा सुरक्ता रक्तदन्तिका।
नीला शाकंभरी दुर्गा सर्वदुखार्तिहारिणी ॥

दंष्ट्रार्चिचतमुखी भीमा नीलायात्र शिरोधरा।
तेजोमण्डलदुर्धषा भ्रामरी वरदाचिता।
अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

○ हाथ का फूल देवी के सामने छोड़ दे।

○ दाहिने हाथ में जल लेकर निम्नवाक्य पढ़कर देवी के सामने जल छोड़ दे -

॥ ओम् अनेन तृतीयावरण पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवता प्रीयताम् ॥
॥ इति तृतीयावरण देवता पूजन ॥

॥ अथ चतुर्थ-आवरण पूजन ॥

○ बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत षट्कोण के बाहर बने आठों दल पत्र पर छोड़े -

ओम् ह्रीम् ऐम् ब्राह्म्यै नमः ॥ ब्राह्मी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥ १ ॥

ओम् ह्रीम् माहेश्वर्यै नमः ॥ माहेश्वरी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥ २ ॥

ओम् ह्रीम् क्लीम् कौमार्यै नमः ॥ कौमारी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥ ३ ॥

ओम् ह्रीम् वैष्णव्यै नमः ॥ वैष्णवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥ ४ ॥

ओम् ह्रीम् लृं वाराह्यै नमः ॥ वाराही शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥ ५ ॥

ओम् क्षुरों नारसिंह्यै नमः ॥ नारसिंही शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥ ६ ॥

ओम् ह्रीम् लं ऐन्द्र्यै नमः ॥ ऐन्द्री शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥ ७ ॥

ओम् ह्रीम् चामुण्डायै नमः ॥ चामुण्डा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥ ८ ॥

॥ ओम् चतुर्थावरणदेवताभ्यो नमः ॥ आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि ॥

- हाथ का शेष अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दे।
- इसके बाद गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर इनकी पूजा कर दे
॥ ओम् चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः॥ - कहता रहे॥
- एक पात्र में जल-गन्ध-पुष्प लेकर अर्घ्य प्रदान करे -
॥ ओम् एताः चतुर्थावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः
पूजिताः तर्पिताः सन्तु॥
- फूल लेकर प्रार्थना करे -
॥ ओम् ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।
वाराही नारसिंही च चामुण्डा चण्डिका तथा
अभीष्ट सिद्धिम् मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पयेतुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्॥
- फूल देवी के आगे छोड़ दे
- हाथ में जल लेकर पढ़े -

- ॥ ओम् अनेन चतुर्थावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवता प्रीयताम्॥
- हाथ का जल देवी के आगे छोड़ दे।
॥ इति चतुर्थ-आवरण पूजन॥
- ॥ अथ पंचम-आवरण पूजन॥
- बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत अपने आगे से प्रारम्भ कर प्रदक्षिण क्रम से २४ दलों पर छोड़े -
ओम् ह्रीम् विं विष्णुमायायै नमः॥ विष्णुमाया शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१॥
ओम् ह्रीम् चेम् चेतनायै नमः॥ चेतना शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२॥
ओम् ह्रीम् बुं बुद्धयै नमः॥ बुद्धि शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥३॥
ओम् ह्रीम् निं निद्रायै नमः॥ निद्रा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥४॥
ओम् ह्रीम् क्षुं क्षुधायै नमः॥ क्षुधा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥५॥
ओम् ह्रीम् छां छायायै नमः॥ छाया शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥६॥

ओम् ह्रीम् शं शक्त्यै नमः॥ शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥७॥
ओम् ह्रीम् तं तृष्णायै नमः॥ तृष्णा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥८॥
ओम् ह्रीम् क्षां क्षान्त्यै नमः॥ क्षान्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥९॥
ओम् ह्रीम् जां जात्यै नमः॥ जाति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१०॥
ओम् ह्रीम् लं लज्जायै नमः॥ लज्जा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥११॥
ओम् ह्रीम् शां शान्त्यै नमः॥ शान्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१२॥
ओम् ह्रीम् श्रं श्रद्धायै नमः॥ श्रद्धा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१३॥
ओम् ह्रीम् कां कान्त्यै नमः॥ कान्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१४॥
ओम् ह्रीम् लं लक्ष्म्यै नमः॥ लक्ष्मी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१५॥
ओम् ह्रीम् धृं धृत्यै नमः॥ धृति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१६॥
ओम् ह्रीम् वृं वृत्यै नमः॥ वृत्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१७॥
ओम् ह्रीम् श्रुं श्रुत्यै नमः॥ श्रुति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१८॥

ओम् ह्रीम् स्मृम् स्मृत्यै नमः॥ स्मृति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१९॥
ओम् ह्रीम् दं दयायै नमः॥ दया शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२०॥
ओम् ह्रीम् तुं तुष्ट्यै नमः॥ तुष्टि शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२१॥
ओम् ह्रीम् पुं पुष्ट्यै नमः॥ पुष्टि शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२२॥
ओम् ह्रीम् मां मातृभ्यो नमः॥ मातृ शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२३॥
ओम् ह्रीम् भ्रां भ्रान्त्यै नमः॥ भ्रान्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२४॥
॥ ओम् पञ्चमावरण देवताभ्यो नमः॥ आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि॥

- ⦿ हाथ का शेष अक्षत अपने सामने भूमि पर छोड़ दे
- ⦿ इसके बाद जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर पूजा कर दे।
- ⦿ एक पात्र में जल-गन्ध-पुष्प लेकर अर्घ्य दे

॥ ओम् एताः पंचमावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः
पूजिताः तर्पिताः सन्तु ॥

- फूल लेकर प्रार्थना करे

॥ ओम् त्राहि संसार सर्पात् मां शरणागतवत्सले
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

- फूल देवी के सामने छोड़ दे।
- हाथ में जल लेकर कहे -

॥ अनेन पञ्चमावरणदेवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवता प्रीयताम् ॥

- हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे ॥ प्रणाम कर ले।
- ॥ इति पंचमावरण पूजन ॥

॥ अथ षष्ठ आवरण पूजन ॥

- बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत यंत्र पर चारों कोने छोड़े -
अग्नि कोण में - ॥ ओम् ह्रीम् गं गणपतये नमः ॥ गणपति शक्ति श्री पादुकां
पूजयामि-तर्पयामि ॥ १ ॥

नैऋत्य कोण में - ॥ ओम् ह्रीम् क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ क्षेत्रपाल शक्ति श्री पादुकां
पूजयामि-तर्पयामि ॥ २ ॥

वायव्य कोण में - ॥ ओम् ह्रीम् वं वटुकाय नमः ॥ वटुक शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-
तर्पयामि ॥ ३ ॥

ईशान कोण में - ॥ ओम् ह्रीम् यां योगिन्यै नमः ॥ योगिनी शक्ति श्री पादुकां
पूजयामि-तर्पयामि ॥ ४ ॥

॥ ओम् षष्ठावरण देवताभ्यो नमः ॥ आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि ॥

- हाथ का शेष अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दे।
- गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर इनकी पूजा कर दे।
- एक पात्र में जल-गन्ध-पुष्प लेकर अर्घ्य दे -

॥ ओम् एताः षष्ठावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः
पूजिताः तर्पिताः सन्तु ॥

- फूल लेकर प्रार्थना करे -
॥ ओम् अभीष्ट सिद्धिम् मे देहि शरणागत वत्सले॥
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम्॥
- फूल यंत्र पर चढ़ा दे।
- हाथ में जल लेकर कहे -
॥ ओम् अनेन षष्ठावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवता प्रीयताम्।
- हाथ का जल सामने भूमि पर छोड़ दे॥ प्रणाम कर ले।
॥ इति षष्ठावरण पूजन॥
- ॥ अथ सप्तम आवरण पूजन॥
- बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत यंत्र पर पूर्व, अग्निकोण, दक्षिण आदि में छोड़कर दश दिक्पाल का आवाहन करे -
पूर्व में - ॥ ओम् ह्रीम् लं इन्द्राय नमः॥ इन्द्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१॥

- अग्निकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् रं अग्नये नमः॥ अग्नि शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२॥
- दक्षिण में - ॥ ओम् ह्रीम् यं यमाय नमः॥ यम शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥३॥
- नैऋत्यकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् क्षं निर्ऋतये नमः॥ निर्ऋति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥४॥
- पश्चिम में - ॥ ओम् वं वरुणाय नमः॥ वरुण शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥५॥
- वायव्यकोण में - ॥ ओम् यं वायवे नमः॥ वायु शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥६॥
- उत्तर में - ॥ ओम् ह्रीम् सं सोमाय नमः॥ सोम शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥७॥
- ईशानकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् इं ईशानाय नमः॥ ईशान शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥८॥

पूर्व-ईशान के मध्य में - ॥ ओम् ह्रीम् ब्रं ब्रह्मणे नमः॥ ब्रह्म शक्ति श्री पादुकां
पूजयामि-तर्पयामि॥१॥

नैऋतिकोण व वश्चाम के मध्य में - ॥ ओम् ह्रीम् अनन्ताय नमः॥ अनन्त शक्ति श्री
पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१०॥

॥ ओम् सप्तमावरण देवताभ्यो नमः॥ आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि॥

- हाथ का शेष अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दे।
- गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर इनकी पूजा कर दे।
- एक पात्र में जल-गन्ध-पुष्प लेकर अर्घ्य दे।

॥ ओम् एताः सप्तमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः
पूजिताः तर्पिताः सन्तु॥

- फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ ओम् अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥

- दाहिने हाथ में जल लेकर कहे -

॥ ओम् अनेन सप्तमावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवता
प्रीयताम्॥

- हाथ का जल यंत्र के सामने छोड़ दे॥ प्रणाम कर ले॥
- ॥ इति सप्तम-आवरण-पूजन॥

॥ अथ अष्टम आवरण पूजन॥

- बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत यंत्र में पश्चिम की ओर से प्रारम्भ कर
निम्नक्रम से दस बार छोड़े -

पश्चिम में - ॥ ओम् ह्रीम् वं वज्राय नमः॥ वज्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१॥

वायव्यकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् शं शक्त्यै नमः॥ शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥२॥

उत्तर में - ॥ ओम् ह्रीम् दं दण्डाय नमः॥ दण्ड शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥३॥

ईशान कोण में - ॥ ओम् ह्रीम् खं खड्गाय नमः ॥ खड्ग शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-
तर्पयामि ॥४॥

पूर्व में - ॥ ओम् ह्रीम् पां पाशाय नमः ॥ पाश शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-
तर्पयामि ॥५॥

अग्निकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् अं अङ्काशाय नमः ॥ अङ्काश शक्ति श्री पादुकां
पूजयामि-तर्पयामि ॥६॥

दक्षिण में - ॥ ओम् गं गदाय नमः ॥ गदा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥७॥

नैऋत्यकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् त्रिम् त्रिशूलाय नमः ॥ त्रिशूल शक्ति श्री पादुकां
पूजयामि-तर्पयामि ॥८॥

नैऋत्यकोण व पश्चिम के बीच में - ॥ ओम् ह्रीम् पं पद्माय नमः ॥ पद्म शक्ति श्री पादुकां
पूजयामि-तर्पयामि ॥९॥

ईशान कोण व पूर्व के बीच में - ॥ ओम् ह्रीम् चं चक्राय नमः ॥ चक्र शक्ति श्री पादुकां

पूजयामि-तर्पयामि ॥१०॥

○ हाथ का शेष अक्षत अपने सामने भूमि पर छोड़ दे।

○ गन्ध - अक्षत-पुष्प चढ़ाकर पूजा कर दे।

॥ अष्टमावरण देवताभ्यो नमः ॥ - कहता रहे।

○ एक पात्र में जल-गन्ध-पुष्प लेकर अर्घ्य दे -

॥ ओम् एताः अष्टमावरण देवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः
पूजिताः तर्पिताः सन्तु ॥

○ फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ ओम् अभीष्ट सिद्धिम् मे देहि शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

○ फूल देवी के सामने छोड़ दे

○ हाथ में जल लेकर कहे -

॥ ओम् अनेन अष्टमावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवता प्रीयताम् ॥

- हाथ का जल देवी के सामने छोड़ दे। प्रणाम कर ले ॥
॥ इति अष्टम-आवरण पूजन ॥

॥ अथ नवम-आवरण पूजन ॥

- बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना अक्षत कलश के चारों ओर क्रमशः पूर्वादि दिशाओं में तथा चारों कोण में सब जगह छिड़के -
पूर्व में - ॥ ओम् ह्रीम् वज्रहस्तायै, गजारूढायै, कादम्बरी देव्यै नमः ॥ कादम्बरी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥१॥
अग्निकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् शक्ति हस्तायै, अजवाहनायै उल्का देव्यै नमः ॥ उल्का देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥२॥
दक्षिण में - ॥ ओम् ह्रीम् दण्डहस्तायै महिषारूढायै कराली देव्यै नमः ॥ कराली देवी

शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥३॥

- नैऋत्यकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् खड्ग हस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षी देव्यै नमः ॥ रक्ताक्षी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥४॥

- पश्चिम में - ॥ ओम् ह्रीम् पाशहस्तायै, मकरवाहनायै श्वेताक्षी देव्यै नमः ॥ श्वेताक्षी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥५॥

- वायव्यकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् अंकुश हस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षी देव्यै नमः ॥ हरिताक्षी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥६॥

- उत्तर में - ॥ ओम् ह्रीम् गदा हस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणी देव्यै नमः ॥ यक्षिणी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥७॥

- ईशानकोण में - ॥ ओम् ह्रीम् शूलहस्तायै, वृषभवाहनायै काली देव्यै नमः ॥ काली देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि ॥८॥

- ईशानकोण व पूर्व के बीच में - ॥ ओम् ह्रीम् पद्महस्तायै, हंसवाहनायै सुरज्येष्ठा देव्यै

नमः॥ सुरज्येष्ठादेवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥९॥

नैऋत्यकोण व पश्चिम के बीच में -

॥ ओम् ह्रीम् चक्रहस्तायै, सर्पवाहनायै सर्पराज्ञी देव्यै नमः॥ सर्पराज्ञी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि-तर्पयामि॥१०॥

॥ ओम् नवमावरणदेवताभ्यो नमः॥ आवाहयामि-स्थापयामि-पूजयामि॥

⊙ हाथ का शेष अक्षत अपने सामने भूमि पर छोड़ दे।

⊙ गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर इनकी पूजा कर दे।

॥ नवमावरणदेवताभ्यो नमः॥ - कहता रहे।

⊙ एक पात्र में जल-गन्ध-पुष्प लेकर अर्घ दे -

॥ ओम् एताः नवमावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु॥

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे

॥ ओम् अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्॥

⊙ फूल देवी जी पर चढ़ा दे।

⊙ दाहिने हाथ में जल लेकर कहे -

॥ ओम् अनेन नवमावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्री दुर्गा देवता प्रीयताम्॥

⊙ हाथ का जल देवी जी के सामने छोड़ दे। प्रणाम कर ले॥

॥ इति नवम-आवरण पूजन॥

टिप्पणी : कुछ पद्धतियों में यहीं पर (नवम-आवरण के पूजन के बाद) शैलीपुत्री आदि नव नामों से देवी के नव स्वरूपों की भी पूजा करते हैं। परिशिष्ट में यह पूजा दी गयी है। वहाँ देखेंगे।

- इसके बाद गन्ध-अक्षत-पुष्प चढ़ाकर पुनः देवी की पूजा कर दे।
- फूल लेकर देवी जी की प्रार्थना करे -

॥ ओम् कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिवद्धेन्दुरेखाम्।

शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपिकरैरुद्धहन्ती त्रिनेत्राम्॥

सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसापूरयन्तीम्
ध्यायेद् दुर्गाम् जयाख्यां त्रिदशपतिनुतां सेवितां सिद्धिकामैः॥१॥

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणाम्।

कन्याभिः करवालखेट विलसद्भस्ताभिरा सेविताम्॥

हस्तैश्चक्र गदासिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।

विभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गाम् त्रिनेत्रां भजे॥

- फूल देवी के आगे चढ़ा दे।
- इसके बाद पाठ करनेवाले ब्राह्मणों का वरण करे -

- ब्राह्मणोंको चंदन-अक्षत लगा दे। पुष्प चढ़ा दे।

॥ ओम् गन्धद्वारां दुराधर्षाम् नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पढ्ये श्रियम्॥

- कुश-अक्षत-जल-द्रव्य तथा वस्त्र लेकर संकल्प करे -

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम्
करिष्यमाण शतचंडी विधानकर्मणि अमुक-अमुक गोत्रान् यथानाम धेयान्
विप्रान् एभिः वरणद्रव्यैः नवार्णमंत्र जपपूर्वकं मार्कण्डेय पुराणोक्त
चंडीसप्तशतीस्तव शतसंख्या परिमित पाठकरणार्थम् युष्मान् वृणे॥

- ब्राह्मणों को वरण सामग्री दे दे।

- ब्राह्मण लेकर कहे - ॥ वृताः स्म॥

- यजमान ब्राह्मणों से प्रार्थना करे

॥ ओम् पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः।

अनुगृह्यन्तु मामद्य शतचण्ड्याख्यकर्मणि॥

- ⊙ ब्राह्मण कहें - ॥ ओम् शान्तिरस्तु ॥
- ⊙ इसके बाद ब्राह्मणगण यथा नियम पाठ करें।

॥ पाठ नियम ॥

- ⊙ ब्राह्मण गण देवी के समीप बैठकर आचमन-प्राणायाम करें।
- ⊙ स्वस्तिवाचन करें। ⊙ दुर्गा देवी की प्रार्थना करें।
- ⊙ संकल्प करें -

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक शर्माऽहम् अमुक गोत्रस्य अमुक नाम्नः यजमानस्य सर्वाभीष्ट सिद्ध्यर्थम् आयुरारोग्यैश्वर्यादि वृद्ध्यर्थम् सर्वदा हर्ष विजय कामना पूर्णता वाप्तये श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थम् सर्वापत् निवारणार्थम् कवचागलकीलक सहितं मार्कण्डेय पुराणोक्तम् मार्कण्डेय उवाचेति पूर्वकं सावर्णिः सूर्य तनयः - इत्यारभ्य सावर्णिर्भविता मनुः - इत्यन्तं रात्रिसूक्तादि देवी सूक्तान्तमादावन्तेऽष्टोत्तर शत नवार्णमंत्र जप पूर्वकम् (अमुक मंत्रेण ६०

सम्पुटितं) सप्तशतीस्तव पाठमन्ते रहस्यत्रय पठनञ्च करिष्ये ॥

- ⊙ संकल्प के बाद पुस्तक की पूजा करें।
- ⊙ इसके बाद नवार्ण मंत्र आदि से अंगन्यास-करन्यास आदि यथाविधि-यथानियम करते हुए पाठ करें।

॥ यथाविधि ॥

- ⊙ कवच, ⊙ अर्गला, ⊙ कीलक स्तोत्र का पाठ ⊙ ऋष्यादि न्यास, ⊙ करन्यास ⊙ हृदयादि न्यास ⊙ अक्षरन्यास ⊙ दिङ् न्यास ⊙ ध्यान ⊙ नवार्ण मंत्र जप ⊙ रात्रिसूक्त पाठ ⊙ सप्तशती न्यास - करने के बाद सम्पुट पाठ प्रारम्भ करे ⊙ १३ अध्याय समाप्त होने पर फिर हृदयादिन्यास करे ⊙ देवी सूक्त का पाठ करे।
- ⊙ नवार्ण मंत्र का जप करने के लिए ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिन्यास, अक्षरन्यास, दिङ् न्यास, ध्यान करे।
- ⊙ नवार्ण मंत्र का जप करे। तीनों रहस्यों का पाठ करे।
- ⊙ कुछ लोग देव्यपराध क्षमापन स्तोत्र का पाठ भी करते हैं - यह लोकप्रथा है। शास्त्रों में नहीं है। ६१

पद्धति
शतचण्डी प्रयोग

- ⊙ यजमान देवी जी की आरती करे। प्रार्थना करे।
- ⊙ ब्राह्मण यजमान को मंत्राक्षत दें।

॥ प्रथम दिन का कार्य सम्पन्न ॥

- ⊙ इसी तरह पाठ पूर्ण होने तक प्रतिदिन यजमान नित्यकर्म से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र-उपवस्त्र धारण कर मंडप में पूर्वमुख बैठे। ⊙ आचमन-प्राणायाम करे ⊙ यथाविधि सभी वेदी की पूजा करे ⊙ देवी जी की पूजा करें ⊙ ब्राह्मणों की पूजा करे। ⊙ ब्राह्मण गण प्रथम दिन की भाँति संकल्पपूर्वक यथाविधि पाठ करें। ⊙ पाठ की समाप्ति पर देवी जी की आरती आदि प्रथम दिन की भाँति करें।

टिप्पणी : यदि एक दिन में एक से अधिक पाठ होना है, तो प्रथम पाठ में पूरी प्रक्रिया करनी होगी। दूसरे-तीसरे पाठ में केवल १३ अध्यायों का ही पाठ होगा।

॥ अथ होम प्रयोग ॥

- ⊙ पाठ समाप्त हो जाने के बाद हवन करे।
- ⊙ यजमान शुद्ध-बुद्ध होकर पूर्व मुख बैठे।

पद्धति
शतचण्डी प्रयोग

- ⊙ पवित्र हो ⊙ आचमन-प्राणायाम करे

॥ ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाऽवस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

- ⊙ आचमन ॥ ओम् केशवाय नमः॥ ओम् माधवाय नमः॥ ओम् नारायणाय नमः॥

- ⊙ हाथ धो ले।

- ⊙ हाथ में अक्षत पुष्प लेकर स्वस्तिवाचन करे -

ओम् आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीता स उद्भिदः।

देवा नो यथा सद मिद् वृधे असन्न प्रा युवो रक्षितारो दिवे दिवे।

देवानां भद्रा सुमतिरऋजूयताम् देवानां ॐ राति रभि नो निवर्त्तताम्।

देवानां ॐ सख्य मुपसे दिमावयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।

तान् पूर्वया निविदाहू महे वयं भगं मित्र मदितिम् दक्ष मस्त्रिधम्।

अर्यमणं वरूण ॐ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।

तन्नो वातो मयो भुवातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत् पिता द्यौः।

तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुतम् धिष्ण्या युवम्।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियन् जिन्व मवसे हू महे वयम्।
पूषानो यथा वेद सा मसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।
स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टने मिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।
पृषदश्वा मरूतः पृश्निमातरः शुभं या वानो विदथे षु जग्मयः।
अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह।
भद्रं कर्मेभिः शृणुयाम् देवा भद्रं पश्ये माक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैः रंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनू भिर्व्यशे महि देवहितं यदायुः।
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्यारी रिषता युर्गन्तोः।
अदितिर्द्यौरदिति रन्तरिक्ष मदितिर्माता सपिता सपुत्रः।
विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्।

६४

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ॐ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः।
पशुभ्यः। विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव। ओम्
शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।

○ हाथ का अक्षत-पुष्प अपने सामने पृथिवी पर छोड़ दे -

○ दूसरा अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करे -

ओम् सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।

६५

संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
 शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णम् चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
 अभीप्सितार्थं सिद्ध्यर्थम् पूजितो यः सुरासुरैः।
 सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
 सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
 शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥
 सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम्।
 येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरिः॥
 तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
 विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥
 लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
 येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ।
 निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
 यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
 तत्र श्री विजयाभूतिर् ध्रुवानीति मतिर्मम।
 अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
 तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
 स्मृतेः सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते।
 पुरुषं तजमं नित्यं व्रजामि शरणं मम॥
 सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
 देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥
 श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः।
 लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः।
 शची पुरन्दराभ्याम् नमः। मातृ-पितृ चरण कमलेभ्यो नमः।

इष्टदेवताभ्यो नमः। कुल देवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवेभ्यो नमः।

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन् महागणाधि पतये नमः॥

○ हाथ का अक्षत-पुष्प सामने पृथिवी पर छोड़ दे।

○ कुश-जल-अक्षत-पुष्प-द्रव्य लेकर संकल्प करे।

हरिः ओम् तत् सत् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ओम् नमः परमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणोऽहि द्वितीये परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे-वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तक देशे पुण्यक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे वर्तमाने यथानाम संवत्सरे यथायनेसूर्ये यथाऋतौ च महामांगल्यप्रदे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे यथानक्षत्रे यथाराशिस्थिते सूर्ये यथा-यथाराशि स्थितेषु शेषेषु ग्रहेषु सत्सु यथालग्नमुहूर्त योग

६८

करणान्वितायाम् एवं ग्रहगुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामः अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् ममात्मनः सकुटुम्बस्य जन्मलग्नतो वा दुस् स्थानगत ग्रहजन्यसकलारिष्ट निवृत्त्यर्थम्-उत्पन्न-उत्पत्त्यमान-अखिलारिष्ट निवृत्तये-दीर्घायुष्य सततारोग्यता वाप्तये धन-धान्य समृद्धयर्थम्-च-कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विध पुरुषार्थ-प्राप्त्यर्थम् च, धन-धान्य-पुत्र-पौत्रादि अनवच्छिन्न सत् संगति लाभार्थम्, शत्रु पराजय पूर्वक बहु कीर्त्या दि अनेकानेक अभ्युदय फलप्राप्त्यर्थम् च, सर्वाभीष्ट सिद्धये ब्राह्मणद्वारा कृतस्य शतचण्डी सप्तशती पाठस्य तत् सम्पूर्णता सिद्धयर्थम् यथा सादित द्रव्येण हवनं करिष्ये।। तदंगत्वेन पंचोपचारैः आवाहित देवतानां पूजनं शतनामानम् अग्निस्थापनं च करिष्ये।।

○ हाथ का अक्षत-कुश आदि सामने भूमि पर छोड़ दे।

○ इसके बाद गौरी-गणेश, कलश, नवग्रह आदि सभी स्थापित देवताओं की संक्षेप में पूजा कर दे।

○ देवी जी की पूजा कर दे।। तत्पश्चात् -

६९

ॐ अग्नि स्थापन-पूजन-हवन करे॥ क्रमशः -

॥ अग्नि स्थान ॥

ॐ हाथ में जल लेकर संकल्प करे -

॥ ओम् अद्य अस्मिन् कर्मणि पंच भू संस्कार पूर्वकम् - अग्नि स्थापनम् करिष्ये॥

- ॐ कुशा से वेदी बटोर कर कुशों को ईशान कोण में फेंक दे।
- ॐ वेदी को गोबर से लीपकर खुवा से ३ रेखा वेदी पर अपनी ओर से आगे की ओर (पश्चिम से पूर्व की ओर) खींचे।
- ॐ दाहिने हाथ का अंगूठा तथा अनामिका (तीसरी) अंगुली मिलाकर तीनों रेखा पर की मिट्टी क्रमशः उठाकर वेदी के ईशान कोण में फेंक दे।
- ॐ रेखाओं पर जल छिड़क दे।
- ॐ वेदी पर बीच में एक त्रिकोण बनाकर उसके बीच में लाल रोड़ी से 'रं' लिख दे।
- ॐ किसी सौभाग्यवती स्त्री (लोकाचार में बहन-बुआ-आदि पूज्या स्त्रियाँ) से कांसे के पात्र में

अग्नि मंगाए।

- ॐ हवनकर्त्ता स्वयं अग्निपात्र लेकर अपनी ओर थाली का मुख कर के वेदी पर अग्नि रख दे, थाली में द्रव्य-अक्षत छोड़ दे।

ॐ अग्नि रखने का मंत्र -

॥ ओम् अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपबुवे। देवाँ आसादयादिह॥

- ॐ अग्नि की रक्षा के लिए वेदी पर लकड़ी रख दे।

ॐ हाथ में अक्षत लेकर अग्नि का आवाहन करे -

ओम् रक्तमाल्याम्बरधरं रक्त पद्मासनस्थितम्।

स्वाहा-स्वधावषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम्॥

शतमंगलकं रौद्रं वह्निमावाह याम्यहम्।

त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिर मितद्युते॥

आगच्छ भगवन्नग्ने वेद्यामस्मिन् सम्मुखो भव॥

ओम् भूर्भुवः स्वः वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्या सित देवल त्रिप्रवरः
भूमिमातः वरुणपितः पश्चिम चरण पूर्व शिर-स्कन्ध ऊर्ध्वपाद पाताल दृष्टि
गोचर मेषध्वज प्राङ्मुख अग्ने त्वं स्वागतोभव।।

- हाथ का अक्षत अग्नि के समक्ष छोड़ दे।
- फिर हाथ में अक्षत लेकर २-२ दाना अग्नि के समीप छिड़के - सप्तजिह्वा का आवाहन करे -
ओम् कनकायै नमः॥१॥ ओम् रक्तायै नमः॥२॥
ओम् कृष्णायै नमः॥३॥ ओम् उद्गारिण्यै नमः॥४॥
ओम् सुप्रभायै नमः॥५॥ ओम् बहुरूपायै नमः॥६॥
ओम् अतिरिक्तायै नमः॥७॥
- हाथ का शेष अक्षत अग्नि के पास छोड़ दे।
- फूल लेकर अग्नि की प्रार्थना करे -
॥ ओम् चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽस्य त्रिधा

वद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यांश्च आविवेश।।

- फूल वेदी के पास छोड़ दे। अग्नि की पूजा करे -
॥ ओम् अग्नये नमः॥ कहता रहे।
- जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प-नैवेद्य-आचमन-ताम्बूल-पूगीफल-दक्षिणा चढ़ाकर अग्नि का पूजन करे।
- पूजन सामग्री वेदी के बाहर छोड़े, अग्नि में नैवेद्य के अतिरिक्त पान-फूल आदि नहीं छोड़ना चाहिए।
- हाथ में जल लेकर छोड़ दे -
॥ अनया पूजया अग्निदेवता प्रीयतां न मम॥
- फूल लेकर प्रार्थना करे - हिरण्य वर्ण मनलं समृद्धं विश्वतो मुखम्।
ओम् अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
- फूल वेदी के पास छोड़ दे।।
- हवनसामग्री पर कुशा से जल छिड़क देना चाहिए।

॥ मण्डप स्थित ब्राह्मण वरण ॥

- मण्डप में जो ब्राह्मण हो (३-५-७ विषम संख्या होनी चाहिए) उनके माथे में तिलक अक्षत लगा कर माथे पर फूल छोड़कर पूजा कर दे।
- कुशा-जल-अक्षत-द्रव्य लेकर संकल्प करे -

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् - अस्मिन् कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थम् यथानाम गोत्रान् युष्मान् ब्राह्मणान् वृणे ॥

- ब्राह्मण वरणसामग्री लेकर कहें -

॥ ओम् स्वस्ति ॥

॥ कुश कण्डिका ॥

- हवन वेदी के दक्षिण की ओर १ पत्ता रखकर - उसके ऊपर १ कुशा में गांठ लगाकर रख दे (यह ब्रह्मा हैं)
- इस ब्रह्मा पर जल छिड़क दे। फूल लेकर प्रार्थना करे -
- ॥ ओम् यावत् कर्म समाप्यते तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥

७४

- फूल ब्रह्मा पर छोड़ दे।
- हवन वेदी के उत्तर १-१ कुशा बगल-बगल रख दे। (दोनों कुशा के बीच ४ अंगुल जगह रहे)
- (कुशा का अग्रभाग उत्तर की ओर रहे)
- प्रणीता पात्र अपने सामने रखे। उसमें जल भर दे। १ कुशा से ढँक दे और इस प्रणीता पात्र को उठा कर बगल-बगल रखे १ कुशा पर रख दे।
- गाँठ लगे कुशा वाले ब्रह्मा की ओर देखे।
- जल भरे प्रणीता पात्र को उठाकर बगल वाले दूसरे कुशा पर रख दे।
- वेदी के चारों ओर कुशा बिछाए।
- ४ कुशा लेकर हवन वेदी के पूर्व रख दे, कुशा का अग्र भाग उत्तर दिशा की ओर रहे (अग्नि कोण से ईशान कोण तक)।
- ४ कुशा लेकर ब्रह्मा गाँठ लगे कुशा और हवन वेदी के बीच में रख दें। कुशा का अग्रभाग पूर्व दिशा में रहे।
- ४ कुशा हवन वेदी के पश्चिम (अपनी ओर) रख दे, अग्रभाग उत्तर की ओर रहे (नैऋत्य कोण

७५

- से वायव्य कोण तक)।
- ४ कुशा हवन वेदी और प्रणीता पात्र के बीच में रख दे, अग्रभाग पूर्व की ओर रहे (अग्नि से प्रणीता पात्र पर्यन्त)।
 - इसके बाद हवन वेदी के उत्तर निम्न वस्तु रखे -
 - पवित्र छेदन हेतु ३ कुशा।
 - १ कुशा का बीच वाला २ पत्र (अर्थात् जड़ निकाल कर बीच की २ पत्ती ले कर रखे।)
 - प्रोक्षणी पात्र - घी-सुवा - ३ हवन लकड़ी १-१ बीता की।
 - उपयमन हेतु कुशा ७-वेणी रूप (सातों कुशा को एक में मिला कर बट ले और ऊपर के हिस्से में गाँठ लगा दे)।
 - सम्मार्जन हेतु कुशा ५
 - पूर्णपात्र के लिए १ कुल्हड़ या अन्य नवीन पात्र में चावल।
 - पवित्र छेदन वाले ३ कुशा को बाएँ हाथ में रख ले, उसके ऊपर २ कुशा पत्र (बीच वाला भाग जो रखा है उसे) दाहिने हाथ में लेकर ३ के ऊपर उसे रख कर चारों ओर ३ बार लपेट दे। आगे का

- १ बीता छोड़ कर शेष तोड़ कर दोनों कुशा ईशान कोण में फेंक दे।
- इस १ बीता वाले कुशपत्र द्वय से प्रणीता का जल ३ बार प्रोक्षणी में छोड़े।
- कुश पत्र द्वय को दाहिने हाथ में रख ले।
- प्रोक्षणी को बायें हाथ में ले ले, - कुश पत्र द्वय से ३ बार प्रोक्षणी का जल ऊपर उछाल दे।
- प्रणीता के जल को प्रोक्षणी में डाल ले।
- प्रोक्षणी के जल को कुशपत्र द्वय से हवन वेदी के उत्तर रखी सभी चीजों पर छिड़क दे।
- अग्नि-प्रणीता के बीच प्रोक्षणी को रख दे।
- घी को कटोरा में रख ले और कटोरा को हवन की वेदी पर अग्नि के ऊपर रख दे। (यदि कटोरा में पहले से घी रखा है, तो घी सहित उस कटोरा को अग्नि पर रख दे)।
- १ तृण या कुशा जला कर घी के चारों ओर घुमाकर कुशा को अग्नि में डाल दें।
- सुवा को दाहिने हाथ में लेकर सुवा का मुख नीचे की ओर कर के अग्नि में ३ बार तपा दें।
- सुवा बाएँ हाथ में ले - सम्मार्जन ५ कुशा को दाहिने हाथ में लेकर-कुशा की जड़ से सुवा की जड़-कुशा के बीच भाग का मध्य भाग - कुशा के अग्रभाग से सुवा का अग्रभाग-पोंछ दें।

- पोंछकर कुशा ईशान कोण में फेंक दें। ○ प्रणीता का जल सुवा पर छिड़क दें।
- सुवा को दाहिने हाथ में लेकर - अग्नि में पहले की तरह फिर ३ बार तपा ले और अपनी दाहिनी ओर एक कुशा पर रख दें।
- घी के कटोरे को अग्नि से उतार लें। उसमें देखें - कोई तिनका आदि पड़ा हो तो निकाल दें।
- दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली और अँगूठा मिलाकर ३ बार कटोरा का घी १-१ बूँद ऊपर की ओर उछाल दें। (घी गरम होने पर कुशपवित्री से उछाले)।
- उपयमन वेणीरूप ७ कुशा को बाएँ हाथ में ले लें।
- खड़ा होकर ब्रह्मा जी का मन में ध्यान करके बगल में रखी तीन लकड़ी को क्रमशः १-१ लकड़ी घी में बोर कर अग्नि में चुपचाप डाल दें।
- बैठ जाय, कुश पत्रद्वय के साथ प्रोक्षणी का जल अग्नि के चारों ओर घुमा दें। कुश पत्र द्वय से जल छिड़ककर अग्नि का सिंचन कर दें। प्रोक्षणी अपने स्थान पर रख दें - कुश पत्रद्वय प्रणीता पर रख दें।
- ॥हवन करें॥ - घी की आहुति देकर सुवा का शेष घी प्रोक्षणी में छोड़ते जायँ -

॥ हवन आहुति मंत्र ॥

- ओम् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।१॥
- ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम।२॥
- ओम् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।३॥
- ओम् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।४॥
- ओम् भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।५॥
- ओम् भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।६॥
- ओम् स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।७॥
- ब्राह्मण यजमान के ऊपर जल छिड़क दे -
- ॥ ओम् यथा वाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।
तद्वद् दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिका॥
शान्तिरस्तु॥ पुष्टिरस्तु॥ तुष्टिरस्तु॥ वृद्धिरस्तु॥

ॐ

इसके बाद यजमान शाकल्य से हवन करे -

ओम् त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्-देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नि तमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ॐ सि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥१॥

ओम् सत्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।

अव यक्ष्यनो वरुण ॐ रराणो वीहि मृडीक ॐ सुहवो न एधि स्वाहा।

इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम॥२॥

ओम् अयाश्चाग्नेऽस्य नभि शस्ति पाश्च सत्य मित्व मया असि।

अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ॐ स्वाहा॥ इदमग्नये अयसे न मम॥३॥

ओम् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशाः वितता महान्तः।

तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर् विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥

॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥४॥

८०

ओम् उदुत्तमं वरुण पाश मस्म द्वाधमं वि मध्यम ॐ श्रयाय।

अथा वय मादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा॥

॥ इदं वरुणा यादित्या यादितये न मम॥

ॐ

यजमान आचमन कर लें। हाथ धो लें। उसके बाद -

ॐ

दो आहुति गौरी गणपति को दें -

ओम् गणनांत्वा गणपति ॐ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ॐ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ॐ हवामहे वसोमम आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्॥

॥ गणपतये नमः स्वाहा॥१॥

ओम् अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥

॥ गौर्यै नमः स्वाहा॥

८१

नवग्रह होम

ॐ नवग्रह की लकड़ी को क्रमशः लेकर घी में बोर कर शाकल्य के साथ हवन करे -

१. सूर्य (मदार की लकड़ी)

ओम् आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् न मृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्य येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

॥ ओम् सूर्याय नमः स्वाहा॥

२. चन्द्र (छिउल)

ओम् इमं देवा असपत्नं सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय ते जानराज्या

येन्द्रस्येन्द्रियाय॥ इमम् मुख्य पुत्र ममुख्यै पुत्र मस्यै विशाण्वोऽमी राजा

सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां च राजा॥

ओम् चन्द्रमसे नमः स्वाहा॥

३. मंगल (खैर)

ओम् अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयन्।

अपा च रेता च सिजिन्वति॥

॥ ओम् भौमाय नमः स्वाहा॥

४. बुध (चिचड़ी)

ओम् उदबुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्व मिष्टा पूर्ते स च सृजेथा मयञ्च।

अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

॥ ओम् बुधाय नमः स्वाहा॥

५. गुरु (पीपल)

ओम् बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यद्दी दयच्छवस ऋत प्रजा तत दस्मा सु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

॥ ओम् गुरवे नमः स्वाहा॥

६. शुक (गूलर)

ओम् अन्नात् परिस्तुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमम् प्रजापतिः।
ऋतेन सत्य मिन्द्रियं विपान ७ शुक्र मन्थस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदम् पयोऽमृतं मधु॥
॥ ओम् शुक्राय नमः स्वाहा॥

७. शनि (शमी)

ओम् शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्रवन्तु नः।
॥ ओम् शनैश्चराय नमः स्वाहा॥

८. राहु (दूब)

ओम् कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।
॥ ओम् राहवे नमः स्वाहा॥

९. केतु (कुशा)

ओम् केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः।
॥ ओम् केतवे नमः स्वाहा॥

ॐ आगे के मंत्रों से केवल शाकल्य से हवन करें -

॥ अधिदेवता हवन ॥

ओम् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुक मिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

॥ ओम् ईश्वराय नमः स्वाहा॥१॥

ओम् श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप
मश्विनौ व्यात्तम्। इष्णान्निषाणा मुम्मइषाण सर्व लोकम् इषाण॥

॥ ओम् उमायै नमः स्वाहा॥२॥

ओम् यद क्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त समुद्रा द्रुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यम् महिजातंतेअर्वन्॥

॥ ओम् स्कन्दाय नमः स्वाहा॥३॥

ओम् विष्णो रराट मसि विष्णोः शनप् त्रेस्थो विष्णोः।

स्यू रसि विष्णो ध्रु वोऽसि वैष्णव मसि विष्णवे त्वा॥

॥ ओम् विष्णवे नमः स्वाहा॥४॥

ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः।

स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः।

॥ ओम् ब्रह्मणे नमः स्वाहा॥५॥

ओम् त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्र ॐ हवे हवे सुहव ॐ शूरमिन्द्रम्।

ह्वयामि शक्रं पुरुहुता मिन्द्र ॐ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥

॥ ओम् इन्द्राय नमः स्वाहा॥६॥

ओम् असि यमो अस्या दित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन।

असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि बन्धनानि॥

॥ ओम् यमाय नमः स्वाहा॥७॥

ओम् कार्ष्णि रसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि।

समापो अद्भि रगमत समोषधीभि रोषधीः॥

॥ ओम् कालाय नमः स्वाहा॥८॥

ओम् इन्धा नास्त्वा शत ॐ हिमा द्युमन्त ॐ समिधी महि।

वयस्वन्तो वयस्कृत ॐ सहस्वन्तः सहस्कृतम्॥

अग्ने सपत्न दम्भ नम दब्धासो अदाभ्यम्।

चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय॥

॥ ओम् चित्रगुप्ताय नमः स्वाहा॥९॥

॥ प्रत्यधि देवता-आहुति॥

अग्नि दूतं पुरो दधे हव्यवाह मप बुवे। देवाँ आसादया दिह॥

॥ ओम् अग्नये नमः स्वाहा॥११॥

ओम् अप् स्वन्तर मृत मप्सु भेषज मपा मुत प्रशस्ति प्वश्वा भवत वाजिनः।

देवी रापो यो न ऊर्मिः प्रतूर्तिः ककुन्मान् वाजसास्ते नायं वाज ॐ सेत॥

॥ ओम् अद्भ्यो नमः स्वाहा॥१२॥

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

ओम् स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथाः॥
 ॥ ओम् पृथिव्यै नमः स्वाहा॥३॥
 ओम् इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढं मस्य पा ॐ सुरे।
 ॥ ओम् विष्णावे नमः स्वाहा॥४॥
 ओम् सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम् पिब वृत्रहा शूर विद्वान्।
 जहि शत्रूं रप मृधो नु दस्वाथा भयं कृणुहि विश्वतो नः॥
 ॥ ओम् इन्द्राय नमः स्वाहा॥५॥
 ओम् अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीप्त्व॥
 ॥ ओम् इन्द्राण्यै नमः स्वाहा॥६॥
 ओम् प्रजापतये न त्व देता न्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव।
 यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ॐ स्याम पतयो रयीणाम्॥
 ॥ ओम् प्रजापतये नमः स्वाहा॥७॥

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।
 ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥
 ॥ ओम् सर्पेभ्यो नमः स्वाहा॥८॥
 ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः।
 स बुध्न्या उपमा अस्य विष्टः सतश्च योनि मसतश्च विवः॥
 ॥ ओम् ब्रह्मणे नमः स्वाहा॥९॥
 ॥ पंचलोकपाल आहुति॥
 ओम् गणनां त्वा गणपति ॐ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ॐ हवामहे निधीनां
 त्व निधिपति ॐ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भध मा त्वम जासि गर्भधम्॥
 ॥ ओम् गणपतये नमः स्वाहा॥१॥
 ओम् अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन।
 ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्॥

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

॥ ओम् दुर्गायै नमः स्वाहा॥२॥

ओम् वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्त वि ऽ शक्तिः।
ते अग्ने ऽश्व मयुं जस्ते अस्मिन् जव मादधुः॥

॥ ओम् वायवे नमः स्वाहा॥३॥

ओम् ऊर्द्ध्वा अस्य समिधो भवन्त्यूर्द्ध्वा शुक्रा शोची ऽ प्यग्ने।
द्यु मत्त मासु प्रतीकस्य सूनोः॥

॥ ओम् आकाशाय नमः स्वाहा॥४॥

ओम् अश्विनोभैषज्येन ब्रह्मवर्चसा याभि षिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन।
वीर्या यात्राद्य याभिषिञ्चा मीन्द्रस्येन्द्रियेण वलाय श्रियै यशसे ऽभिषिञ्चामि॥

॥ ओम् अश्विभ्यां नमः स्वाहा॥५॥

॥ दशदिक्पाल आहुति॥

ओम् त्रातार मिन्द्रमवितारमिन्द्र ऽ हवे हवे सुहव ऽ शूरमिन्द्रम्।

ह्वयामि शक्रं पुरुहूत मिन्द्र ऽ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥

॥ ओम् इन्द्राय नमः स्वाहा॥१॥

ओम् अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाह मुप ब्रुवे। देवां आसादया दिह॥

॥ ओम् अग्नये नमः स्वाहा॥२॥

ओम् असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन।

असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि वन्धनानि॥

॥ ओम् यमाय नमः स्वाहा॥३॥

ओम् एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहा। अग्नि नेत्रेभ्यो देवेभ्यः पुरः सद्भ्यः

स्वाहा॥ यम नेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणा सद्भ्यः स्वाहा। विश्वेदेव नेत्रेभ्यो देवेभ्यः

पश्चात्सद्भ्यः स्वाहा॥ मित्रावरुण नेत्रेभ्यो वा मरुन् नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य उत्तरा

सद्भ्यः स्वाहा। सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य उपरि सद्भ्यो दुवस्वद्भ्यः स्वाहा॥

॥ ओम् निर्ऋतये नमः स्वाहा॥४॥

ओम् इममे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वा मवस्यु रा चके॥

॥ ओम् वरुणाय नमः स्वाहा॥५॥

ओम् वायु रग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्धिः शिवाभिः॥

॥ ओम् वायवे नमः स्वाहा॥६॥

ओम् कुविदंग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनु पूर्व विपूय।

इहे हैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति॥

॥ ओम् कुबेराय नमः स्वाहा॥७॥

ओम् ईशवास्य मिदं सर्वम् यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्वक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्॥

॥ ओम् ईशानाय नमः स्वाहा॥८॥

ओम् ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो वेन आवः।

स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः॥

॥ ओम् ब्रह्मणे नमः स्वाहा॥९॥

ओम् नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।

ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥

॥ ओम् अनन्ताय नमः स्वाहा॥१०॥

षोडशमातृका - आहुति

ओम् गणपतये नमः स्वाहा॥१॥

ओम् गौर्यै नमः स्वाहा॥२॥

ओम् पद्मायै नमः स्वाहा॥३॥

ओम् शच्यै नमः स्वाहा॥४॥

ओम् मेधायै नमः स्वाहा॥५॥

ओम् सावित्र्यै नमः स्वाहा॥६॥

ओम् विजयायै नमः स्वाहा॥७॥

ओम् जयायै नमः स्वाहा॥८॥

ओम् देवसेनायै नमः स्वाहा॥९॥

ओम् स्वधायै नमः स्वाहा॥१०॥

ओम् स्वाहायै नमः स्वाहा॥११॥

ओम् मातृभ्यो नमः स्वाहा॥१२॥

ओम् लोकमातृभ्यो नमः स्वाहा॥१३॥

ओम् धृत्यै नमः स्वाहा॥१४॥

ओम् पुष्ट्यै नमः स्वाहा॥१५॥

ओम् तुष्ट्यै नमः स्वाहा॥१६॥

ओम् आत्मनः कुलदेवतायै नमः स्वाहा॥१७॥

॥ अथ वास्तुपीठ आहुति॥

ओम् श्री लक्ष्म्यै नमः स्वाहा॥११॥

ओम् यशोवत्यै नमः स्वाहा॥१२॥

ओम् कान्तायै नमः स्वाहा॥१३॥

ओम् सुप्रियायै नमः स्वाहा॥४॥
 ओम् विमलायै नमः स्वाहा॥५॥
 ओम् शिवायै नमः स्वाहा॥६॥
 ओम् सुभगायै नमः स्वाहा॥७॥
 ओम् सुमत्यै नमः स्वाहा॥८॥
 ओम् इडायै नमः स्वाहा॥९॥
 ओम् धन्यायै नमः स्वाहा॥१०॥
 ओम् प्राणायै नमः स्वाहा॥११॥
 ओम् विशालायै नमः स्वाहा॥१२॥
 ओम् स्थिरायै नमः स्वाहा॥१३॥
 ओम् भद्रायै नमः स्वाहा॥१४॥
 ओम् जयायै नमः स्वाहा॥१५॥
 ओम् निशायै नमः स्वाहा॥१६॥
 ओम् विरजायै नमः स्वाहा॥१७॥

ओम् विभवायै नमः स्वाहा॥१८॥
 ओम् शिखिने नमः स्वाहा॥१९॥
 ओम् पर्जन्याय नमः स्वाहा॥२०॥
 ओम् जयन्ताय नमः स्वाहा॥२१॥
 ओम् कुलिशायुधाय नमः स्वाहा॥२२॥
 ओम् सूर्याय नमः स्वाहा॥२३॥
 ओम् सत्याय नमः स्वाहा॥२४॥
 ओम् भृशाय नमः स्वाहा॥२५॥
 ओम् आकाशाय नमः स्वाहा॥२६॥
 ओम् वायवे नमः स्वाहा॥२७॥
 ओम् पूष्णे नमः स्वाहा॥२८॥
 ओम् वितथाय नमः स्वाहा॥२९॥
 ओम् गृहक्षताय नमः स्वाहा॥३०॥
 ओम् यमाय नमः स्वाहा॥३१॥

ओम् गन्धर्वाय नमः स्वाहा॥३२॥
 ओम् भृंगराजाय नमः स्वाहा॥३३॥
 ओम् मृगाय नमः स्वाहा॥३४॥
 ओम् पितृभ्यो नमः स्वाहा॥३५॥
 ओम् दैवारिकाय नमः स्वाहा॥३६॥
 ओम् सुग्रीवाय नमः स्वाहा॥३७॥
 ओम् पुष्पदन्ताय नमः स्वाहा॥३८॥
 ओम् वरुणाय नमः स्वाहा॥३९॥
 ओम् असुराय नमः स्वाहा॥४०॥
 ओम् शोषाय नमः स्वाहा॥४१॥
 ओम् पापाय नमः स्वाहा॥४२॥
 ओम् रोगाय नमः स्वाहा॥४३॥
 ओम् अहये नमः स्वाहा॥४४॥
 ओम् मुख्याय नमः स्वाहा॥४५॥
 ओम् भल्लदाय नमः स्वाहा॥४६॥

ओम् सोमाय नमः स्वाहा॥४७॥
 ओम् सर्पाय नमः स्वाहा॥४८॥
 ओम् अदित्यै नमः स्वाहा॥४९॥
 ओम् दित्यै नमः स्वाहा॥५०॥
 ओम् आपाय नमः स्वाहा॥५१॥
 ओम् सावित्राय नमः स्वाहा॥५२॥
 ओम् जयाय नमः स्वाहा॥५३॥
 ओम् रुद्राय नमः स्वाहा॥५४॥
 ओम् अर्चमणे नमः स्वाहा॥५५॥
 ओम् सवित्रे नमः स्वाहा॥५६॥
 ओम् विवस्वते नमः स्वाहा॥५७॥
 ओम् विवुधाधिपाय नमः स्वाहा॥५८॥
 ओम् मित्राय नमः स्वाहा॥५९॥
 ओम् राजयक्ष्मणे नमः स्वाहा॥६०॥
 ओम् पृथ्वीधराय नमः स्वाहा॥६१॥

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

ओम् आपवत्साय नमः स्वाहा ॥४४॥
 ओम् ब्रह्मणे नमः स्वाहा ॥४५॥
 ओम् चरक्यै नमः स्वाहा ॥४६॥
 ओम् विदार्यै नमः स्वाहा ॥४७॥
 ओम् पूतनायै नमः स्वाहा ॥४८॥
 ओम् पापराक्षस्यै नमः स्वाहा ॥४९॥
 ओम् स्कन्दाय नमः स्वाहा ॥५०॥
 ओम् अर्यमणे नमः स्वाहा ॥५१॥
 ओम् जृम्भकाय नमः स्वाहा ॥५२॥
 ओम् पिलिपिच्छाय नमः स्वाहा ॥५३॥
 ओम् इन्द्राय नमः स्वाहा ॥५४॥
 ओम् अग्नये नमः स्वाहा ॥५५॥
 ओम् यमाय नमः स्वाहा ॥५६॥
 ओम् निर्ऋतये नमः स्वाहा ॥५७॥
 ओम् वरुणाय नमः स्वाहा ॥५८॥

ओम् वायवे नमः स्वाहा ॥५९॥
 ओम् कुबेराय नमः स्वाहा ॥६०॥
 ओम् ईश्वराय नमः स्वाहा ॥६१॥
 ओम् ब्रह्मणे नमः स्वाहा ॥६२॥
 ओम् अनन्ताय नमः स्वाहा ॥६३॥
 ओम् वास्तोष्पतये नमः स्वाहा ॥६४॥

॥ अथ चतुष्पष्टियोगिनी आहुति ॥

○ श्री महाकाल्यै नमः स्वाहा ॥
 ○ श्री महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा ॥
 ○ श्री महासरस्वत्यै नमः स्वाहा ॥
 ओम् गजाननायै नमः स्वाहा ॥१॥
 ओम् ओम् सिंहमुख्यै नमः स्वाहा ॥२॥
 ओम् गृध्रास्यायै नमः स्वाहा ॥३॥
 ओम् काकतुण्डिकायै नमः स्वाहा ॥४॥

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

ओम् उष्ट्रग्रीवायै नमः स्वाहा ॥५॥
 ओम् हयग्रीवायै नमः स्वाहा ॥६॥
 ओम् वाराह्यै नमः स्वाहा ॥७॥
 ओम् शरभाननायै नमः स्वाहा ॥८॥
 ओम् उलूकिकायै नमः स्वाहा ॥९॥
 ओम् शिवाख्यायै नमः स्वाहा ॥१०॥
 ओम् मयूर्यै नमः स्वाहा ॥११॥
 ओम् विकटाननायै नमः स्वाहा ॥१२॥
 ओम् अष्टवक्रायै नमः स्वाहा ॥१३॥
 ओम् कोटराक्ष्यै नमः स्वाहा ॥१४॥
 ओम् कुब्जायै नमः स्वाहा ॥१५॥
 ओम् विकटलोचनायै नमः स्वाहा ॥१६॥
 ओम् शुष्कोदर्यै नमः स्वाहा ॥१७॥
 ओम् ललजिह्वायै नमः स्वाहा ॥१८॥
 ओम् श्वदंष्ट्रायै नमः स्वाहा ॥१९॥

ओम् वानराननायै नमः स्वाहा ॥२०॥
 ओम् ऋक्षाक्ष्यै नमः स्वाहा ॥२१॥
 ओम् केकराक्ष्यै नमः स्वाहा ॥२२॥
 ओम् वृहत् तुण्डायै नमः स्वाहा ॥२३॥
 ओम् सुराप्रियायै नमः स्वाहा ॥२४॥
 ओम् कपालहस्तायै नमः स्वाहा ॥२५॥
 ओम् रक्ताक्ष्यै नमः स्वाहा ॥२६॥
 ओम् शुक्र्यै नमः स्वाहा ॥२७॥
 ओम् श्येन्यै नमः स्वाहा ॥२८॥
 ओम् कपोतिकायै नमः स्वाहा ॥२९॥
 ओम् पाशहस्तायै नमः स्वाहा ॥३०॥
 ओम् दण्डहस्तायै नमः स्वाहा ॥३१॥
 ओम् प्रचण्डायै नमः स्वाहा ॥३२॥
 ओम् चण्डविक्रमायै नमः स्वाहा ॥३३॥
 ओम् शिशुघ्न्यै नमः स्वाहा ॥३४॥

ओम् काल्यै नमः स्वाहा ॥३५॥
 ओम् पापहन्त्र्यै नमः स्वाहा ॥३६॥
 ओम् रुधिरपायिन्यै नमः स्वाहा ॥३७॥
 ओम् वसाधयायै नमः स्वाहा ॥३८॥
 ओम् गर्भभक्षायै नमः स्वाहा ॥३९॥
 ओम् शवहस्तायै नमः स्वाहा ॥४०॥
 ओम् आन्त्रमालिन्यै नमः स्वाहा ॥४१॥
 ओम् स्थूलकेश्यै नमः स्वाहा ॥४२॥
 ओम् बृहत्कुक्ष्यै नमः स्वाहा ॥४३॥
 ओम् सर्पास्यायै नमः स्वाहा ॥४४॥
 ओम् प्रेतवाहनायै नमः स्वाहा ॥४५॥
 ओम् दन्दशूकरायै नमः स्वाहा ॥४६॥
 ओम् क्रौञ्च्यै नमः स्वाहा ॥४७॥
 ओम् मृगशीर्षायै नमः स्वाहा ॥४८॥
 ओम् वृषाननायै नमः स्वाहा ॥४९॥

ओम् व्यात्तास्यायै नमः स्वाहा ॥५०॥
 ओम् धूमनिश्वासायै नमः स्वाहा ॥५१॥
 ओम् व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः स्वाहा ॥५२॥
 ओम् तापिन्यै नमः स्वाहा ॥५३॥
 ओम् शोषणदृष्ट्यै नमः स्वाहा ॥५४॥
 ओम् कोटर्यै नमः स्वाहा ॥५५॥
 ओम् स्थूलनासिकायै नमः स्वाहा ॥५६॥
 ओम् विद्युत्प्रभायै नमः स्वाहा ॥५७॥
 ओम् बलाकास्यायै नमः स्वाहा ॥५८॥
 ओम् मार्जार्यै नमः स्वाहा ॥५९॥
 ओम् कटपूतनायै नमः स्वाहा ॥६०॥
 ओम् अट्टाट्टाहासायै नमः स्वाहा ॥६१॥
 ओम् कामाक्ष्यै नमः स्वाहा ॥६२॥
 ओम् मृगाक्ष्यै नमः स्वाहा ॥६३॥
 ओम् मृगलोचनायै नमः स्वाहा ॥६४॥

॥ क्षेत्रपाल आहुति ॥

ओम् क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा ॥१॥
 ओम् अजराय नमः स्वाहा ॥२॥
 ओम् व्यापकाय नमः स्वाहा ॥३॥
 ओम् इन्द्रचौराय नमः स्वाहा ॥४॥
 ओम् इन्द्रमूर्तये नमः स्वाहा ॥५॥
 ओम् उक्षाय नमः स्वाहा ॥६॥
 ओम् कूर्माण्डाय नमः स्वाहा ॥७॥
 ओम् वरुणाय नमः स्वाहा ॥८॥
 ओम् वटुकाय नमः स्वाहा ॥९॥
 ओम् विमुक्ताय नमः स्वाहा ॥१०॥
 ओम् लिप्तकामाय नमः स्वाहा ॥११॥
 ओम् लीलाकाय नमः स्वाहा ॥१२॥
 ओम् एकदंष्ट्राय नमः स्वाहा ॥१३॥
 ओम् ऐरावताय नमः स्वाहा ॥१४॥

ओम् ओषधिज्ञाय नमः स्वाहा ॥१५॥
 ओम् बन्धनाय नमः स्वाहा ॥१६॥
 ओम् दिव्यकाय नमः स्वाहा ॥१७॥
 ओम् कम्बलाय नमः स्वाहा ॥१८॥
 ओम् भीषणाय नमः स्वाहा ॥१९॥
 ओम् गवयाय नमः स्वाहा ॥२०॥
 ओम् घण्टाय नमः स्वाहा ॥२१॥
 ओम् व्यालाय नमः स्वाहा ॥२२॥
 ओम् अणवे नमः स्वाहा ॥२३॥
 ओम् चन्द्रवारुणाय नमः स्वाहा ॥२४॥
 ओम् पटाटोपाय नमः स्वाहा ॥२५॥
 ओम् जटालाय नमः स्वाहा ॥२६॥
 ओम् क्रतवे नमः स्वाहा ॥२७॥
 ओम् घण्टेश्वराय नमः स्वाहा ॥२८॥
 ओम् विटङ्गाय नमः स्वाहा ॥२९॥

ओम् मणिमानाय नमः स्वाहा ॥३०॥
 ओम् गणबन्धवे नमः स्वाहा ॥३१॥
 ओम् डामराय नमः स्वाहा ॥३२॥
 ओम् दुण्डिकर्णाय नमः स्वाहा ॥३३॥
 ओम् स्थविराय नमः स्वाहा ॥३४॥
 ओम् दन्तुराय नमः स्वाहा ॥३५॥
 ओम् धनदाय नमः स्वाहा ॥३६॥
 ओम् नागकर्णाय नमः स्वाहा ॥३७॥
 ओम् महावलाय नमः स्वाहा ॥३८॥
 ओम् फेत्काराय नमः स्वाहा ॥३९॥
 ओम् चीकराय नमः स्वाहा ॥४०॥
 ओम् सिंहाय नमः स्वाहा ॥४१॥
 ओम् मृगाय नमः स्वाहा ॥४२॥
 ओम् यक्षाय नमः स्वाहा ॥४३॥
 ओम् मेघवाहनाय नमः स्वाहा ॥४४॥

ओम् तीक्ष्णोष्ठाय नमः स्वाहा ॥४५॥
 ओम् अनलाय नमः स्वाहा ॥४६॥
 ओम् शुक्लतुण्डाय नमः स्वाहा ॥४७॥
 ओम् सुधालापाय नमः स्वाहा ॥४८॥
 ओम् बर्बरकाय नमः स्वाहा ॥४९॥
 ओम् पवनाय नमः स्वाहा ॥५०॥
 ओम् पावनाय नमः स्वाहा ॥५१॥
 ॥ सर्वतोभद्र देवता आहुति ॥

ओम् ब्रह्मणे नमः स्वाहा ॥१॥
 ओम् सोमाय नमः स्वाहा ॥२॥
 ओम् ईशानाय नमः स्वाहा ॥३॥
 ओम् इन्द्राय नमः स्वाहा ॥४॥
 ओम् अग्नये नमः स्वाहा ॥५॥
 ओम् यमाय नमः स्वाहा ॥६॥

ओम् निर्ऋतये नमः स्वाहा ॥७॥
 ओम् वरुणाय नमः स्वाहा ॥८॥
 ओम् वायवे नमः स्वाहा ॥९॥
 ओम् अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा ॥१०॥
 ओम् एकादश रुद्रेभ्यो नमः स्वाहा ॥११॥
 ओम् द्वादशादित्येभ्यो नमः स्वाहा ॥१२॥
 ओम् अश्विभ्यां नमः स्वाहा ॥१३॥
 ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः स्वाहा ॥१४॥
 ओम् सप्तयक्षेभ्यो नमः स्वाहा ॥१५॥
 ओम् भूतनागेभ्यो नमः स्वाहा ॥१६॥
 ओम् गन्धर्वाप्सराभ्यो नमः स्वाहा ॥१७॥
 ओम् स्कन्दाय नमः स्वाहा ॥१८॥
 ओम् नन्दिने नमः स्वाहा ॥१९॥
 ओम् शूलमहाकालाभ्यां नमः स्वाहा ॥२०॥
 ओम् दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः स्वाहा ॥२१॥

ओम् दुर्गायै नमः स्वाहा ॥२२॥
 ओम् विष्णवे नमः स्वाहा ॥२३॥
 ओम् स्वधायै नमः स्वाहा ॥२४॥
 ओम् मृत्युरोगाभ्यां नमः स्वाहा ॥२५॥
 ओम् गणपतये नमः स्वाहा ॥२६॥
 ओम् अद्भ्यो नमः स्वाहा ॥२७॥
 ओम् मरुद्भ्यो नमः स्वाहा ॥२८॥
 ओम् पृथिव्यै नमः स्वाहा ॥२९॥
 ओम् गंगानदीभ्यो नमः स्वाहा ॥३०॥
 ओम् सप्तसागरेभ्यो नमः स्वाहा ॥३१॥
 ओम् मेरवे नमः स्वाहा ॥३२॥
 ओम् गदायै नमः स्वाहा ॥३३॥
 ओम् त्रिशूलाय नमः स्वाहा ॥३४॥
 ओम् वज्राय नमः स्वाहा ॥३५॥
 ओम् शक्तये नमः स्वाहा ॥३६॥

ओम् दण्डाय नमः स्वाहा॥३७॥
 ओम् खड्गाय नमः स्वाहा॥३८॥
 ओम् पाशाय नमः स्वाहा॥३९॥
 ओम् अंकुशाय नमः स्वाहा॥४०॥
 ओम् गौतमाय नमः स्वाहा॥४१॥
 ओम् भरद्वाजाय नमः स्वाहा॥४२॥
 ओम् विश्वामित्राय नमः स्वाहा॥४३॥
 ओम् कश्यपाय नमः स्वाहा॥४४॥
 ओम् जमदग्नये नमः स्वाहा॥४५॥
 ओम् वशिष्ठाय नमः स्वाहा॥४६॥
 ओम् अत्रये नमः स्वाहा॥४७॥
 ओम् अरुन्धत्यै नमः स्वाहा॥४८॥
 ओम् ऐन्द्र्यै नमः स्वाहा॥४९॥

ओम् कौमार्यै नमः स्वाहा॥५०॥
 ओम् ब्राह्म्यै नमः स्वाहा॥५१॥
 ओम् वाराह्यै नमः स्वाहा॥५२॥
 ओम् चामुण्डायै नमः स्वाहा॥५३॥
 ओम् वैष्णव्यै नमः स्वाहा॥५४॥
 ओम् माहेश्वर्यै नमः स्वाहा॥५५॥
 ओम् वैनायक्यै नमः स्वाहा॥५६॥
 श्री लक्ष्मीनारायणाभ्यां स्वाहा॥
 श्री वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां स्वाहा॥
 श्री शची पुरन्दराभ्यां स्वाहा॥
 श्री उमा महेश्वराभ्यां स्वाहा॥
 श्री सीतारामाभ्यां स्वाहा॥
 ओम् नमो भगवते वासुदेवाय नमः स्वाहा॥

ॐ देवी जी का विशेष हवन करें। मंत्र इस प्रकार है -

ओम् श्री महाकाल्यै नमः स्वाहा॥१॥
 ओम् श्री महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा॥२॥
 ओम् श्री महासरस्वत्यै नमः स्वाहा॥३॥
 ओम् दुर्गा देव्यै नमः स्वाहा॥४॥
 ओम् श्री शैलपुत्री देव्यै नमः स्वाहा॥५॥
 ओम् श्री ब्रह्मचारिण्यै नमः स्वाहा॥६॥
 ओम् श्री चन्द्रघण्टायै नमः स्वाहा॥७॥

टिप्पणी : देवी जी की आहुति में निम्नलिखित विशेष वस्तु शाकल्य में मिलाना चाहिए -
 गुरिच, जावित्री, जायफल, जैभीरी, मुनक्का या छुहारा, वेल का गूदा, दूर्वा, लावा, पलाशपुष्प,
 गुगुल, सतावर, मीठा नींबू, गरी का टुकड़ा, ईख का टुकड़ा, शहद, घी, घीर आदि॥

ओम् श्री कूष्माण्डायै नमः स्वाहा ॥८॥
 ओम् श्री स्कन्दमात्रे नमः स्वाहा ॥९॥
 ओम् श्री कात्यायनी देव्यै नमः स्वाहा ॥१०॥
 ओम् श्री कालरात्र्यै नमः स्वाहा ॥११॥
 ओम् श्री महागौर्यै नमः स्वाहा ॥१२॥
 ओम् श्री सिद्धिदात्र्यै नमः स्वाहा ॥१३॥
 ओम् श्री चामुण्डायै नमः स्वाहा ॥१४॥
 ओम् श्री वाराहीदेव्यै नमः स्वाहा ॥१५॥
 ओम् श्री महिषासनायै नमः स्वाहा ॥१६॥
 ओम् श्री ऐन्द्र्यै नमः स्वाहा ॥१७॥
 ओम् श्री वैष्णव्यै नमः स्वाहा ॥१८॥
 ओम् श्री माहेश्वर्यै नमः स्वाहा ॥१९॥
 ओम् श्री वृषारूढायै नमः स्वाहा ॥२०॥
 ओम् श्री कौमार्यै नमः स्वाहा ॥२१॥
 ओम् श्री शिखिवाहनायै नमः स्वाहा ॥२२॥

ओम् श्री पद्मासनायै नमः स्वाहा ॥२३॥
 ओम् श्री पद्महस्तायै नमः स्वाहा ॥२४॥
 ओम् श्री हरिप्रियायै नमः स्वाहा ॥२५॥
 ओम् श्री श्वेतरूपधरादेव्यै नमः स्वाहा ॥२६॥
 ओम् श्री ईश्वर्यै नमः स्वाहा ॥२७॥
 ओम् श्री वृषवाहनायै नमः स्वाहा ॥२८॥
 ओम् श्री ब्राह्म्यै नमः स्वाहा ॥२९॥
 ओम् श्री हंससमारूढायै नमः स्वाहा ॥३०॥
 ओम् श्री सर्वाभरणभूषितायै नमः स्वाहा ॥३१॥
 ओम् श्री नानाभरणशोभायै नमः स्वाहा ॥३२॥
 ओम् श्री नानारत्नोपशोभितायै नमः स्वाहा ॥३३॥
 ओम् श्री महारौद्रायै नमः स्वाहा ॥३४॥
 ओम् श्री महाभय विनाशिन्यै नमः स्वाहा ॥३५॥
 ओम् श्री खड्गधारिण्यै नमः स्वाहा ॥३६॥
 ओम् श्री वारुण्यै नमः स्वाहा ॥३७॥

१०४

ओम् श्री मृगवाहिन्यै नमः स्वाहा ॥३८॥
 ओम् श्री कौमार्यै नमः स्वाहा ॥३९॥
 ओम् श्री शूलधारिण्यै नमः स्वाहा ॥४०॥
 ओम् श्री ब्रह्माण्यै नमः स्वाहा ॥४१॥
 ओम् श्री वैष्णव्यै नमः स्वाहा ॥४२॥
 ओम् श्री जयायै नमः स्वाहा ॥४३॥
 ओम् श्री विजयायै नमः स्वाहा ॥४४॥
 ओम् श्री अपराजितायै नमः स्वाहा ॥४५॥
 ओम् श्री उमायै नमः स्वाहा ॥४६॥
 ओम् श्री त्रिनेत्रायै नमः स्वाहा ॥४७॥
 ओम् श्री कालिकायै नमः स्वाहा ॥४८॥
 ओम् श्री शाकम्भर्यै नमः स्वाहा ॥४९॥
 ओम् श्री चित्रघण्टायै नमः स्वाहा ॥५०॥
 ओम् श्री कामाक्ष्यै नमः स्वाहा ॥५१॥
 ओम् श्री सर्वमंगलायै नमः स्वाहा ॥५२॥

ओम् श्री नीलग्रीवायै नमः स्वाहा ॥५३॥
 ओम् श्री वज्रधारिण्यै नमः स्वाहा ॥५४॥
 ओम् श्री ललितादेव्यै नमः स्वाहा ॥५५॥
 ओम् श्री फूलमतीदेव्यै नमः स्वाहा ॥५६॥
 ओम् श्री अलोपशंकरीदेव्यै नमः स्वाहा ॥५७॥
 ओम् श्री शीतलादेव्यै नमः स्वाहा ॥५८॥
 ओम् श्री कल्याणीदेव्यै नमः स्वाहा ॥५९॥
 ओम् श्री मसुरियन देव्यै नमः स्वाहा ॥६०॥
 ओम् श्री विन्ध्यवासिनीदेव्यै नमः स्वाहा ॥६१॥
 ओम् श्री अष्टभुजा देव्यै नमः स्वाहा ॥६२॥
 ओम् श्री दुर्गातिनाशिन्यै नमः स्वाहा ॥६३॥
 ओम् श्री जगन्मात्रे नमः स्वाहा ॥६४॥
 ओम् श्री सर्वमंगलायै नमः स्वाहा ॥६५॥
 ओम् श्री मृडान्यै नमः स्वाहा ॥६६॥
 ओम् श्री भैरवीदेव्यै नमः स्वाहा ॥६७॥

१०५

शतचण्डी प्रयोग पद्धति

ओम् श्री विमलादेव्यै नमः स्वाहा॥६८॥
 ओम् श्री महिषमर्दिन्यै नमः स्वाहा॥६९॥
 ओम् श्री अपर्णादेव्यै नमः स्वाहा॥७०॥
 ओम् श्री विशालाक्ष्यै नमः स्वाहा॥७१॥
 ओम् श्री त्रिपुरमालिन्यै नमः स्वाहा॥७२॥
 ओम् श्री अपरिमितायै नमः स्वाहा॥७३॥

ओम् श्री वषट्कारायै नमः स्वाहा॥७४॥
 ओम् श्री कौशिक्यै नमः स्वाहा॥७५॥
 ओम् श्री स्थितिसंहारकारिण्यै नमः स्वाहा॥७६॥
 ओम् श्री सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः स्वाहा॥७७॥
 ओम् श्री सर्वदेवमयी मूर्त्यै नमः स्वाहा॥७८॥
 ओम् श्री दुर्गा देव्यै नमः स्वाहा॥७९॥

- इसके बाद - खीर-पूड़ी से कम से कम २८ आहुति नवार्ण-मंत्र से देना चाहिए -
 ॥ओम् ऐम् ह्रीम् क्लीम् चामुण्डायै विच्चे स्वाहा॥
- तत्पश्चात् - जिस मंत्र से सम्पुट पाठ किया गया है, उस मंत्र से २८ आहुति देना चाहिए।

टिप्पणी - शास्त्र के अनुसार सप्तशती के १३ अध्याय के प्रत्येक श्लोक से आहुति देना चाहिए।

१०६

- कवच से तथा 'शूलेन पाहिनो' इस ४ मंत्र से आहुति का निषेध किया गया है। अनुष्ठान प्रकाश में लिखा है।
- इतना हवन करने के बाद थोड़ा शाकल्य रोक ले और बलि प्रदान करे।

॥बलि प्रदान॥

- रूई की १० बत्ती घी में भिगो कर बना ले।
- १ आम की पत्ती पर १ बत्ती जलाए। ४ दाना उरद-दही मिला कर बत्ती के साथ रख ले।
- जल छोड़कर - आम की पत्ती बत्ती सहित उठाकर पूर्व दिशा की ओर आरती की तरह घुमा दे - और हवन वेदी के पूर्व रख दे।
- इसी तरह १-१ बत्ती दही-उरद के साथ आम की पत्ती पर रखता हुआ चारों ओर क्रमशः दिखाये, और वेदी के चारों ओर रखे।
- मंत्र इस प्रकार है -

१०७

१. पूर्व में -

ओम् इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो इन्द्र! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

२. पूर्व-दक्षिण के कोने में -

ओम् अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो अग्ने! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

३. दक्षिण दिशा में -

ओम् यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो यम! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

१०८

४. दक्षिण-पश्चिम के कोने में -

ओम् निर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

५. पश्चिम में -

ओम् वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

६. पश्चिम-उत्तर के कोने में -

ओम् वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो वायो! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

१०९

७. उत्तर में -

ओम् कुवेराय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो कुवेर! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

८. उत्तर-पूर्व के कोने में -

ओम् ईशानाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो ईशान! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

९. ईशान कोण व पूर्व के बीच में -

ओम् ब्रह्मणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन्! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

११०

१०. नैऋत्य कोण और पश्चिम के बीच में -

ओम् अनन्ताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष
भक्तबलिं समर्पयामि। भो अनन्त! दिशं रक्ष बलिं भक्ष अस्य यजमानस्य
सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

॥नवग्रह बलि॥

○ इसी तरह १ बत्ती दही-उरद के साथ लेकर नवग्रह को बलि प्रदान करे -

ओम् सूर्यादि नवग्रहेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतं सदीपं
दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो सूर्यादि नवग्रहाः बलिं भक्षध्वम् अस्य
यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्तारः क्षेमकर्त्तारः शान्तिकर्त्तारः तुष्टिकर्त्तारः
पुष्टिकर्त्तारः वरदा भवत। अनेन बलिदानेन सूर्यादि नवग्रहाः प्रीयन्ताम्।

॥क्षेत्रपाल बलि॥

○ १ मिट्टी के प्याले में ४ मुख की बत्ती जला ले

१११

- ॐ १ पत्तल पर दही-उरद-सिन्दूर-काजल लगाकर दीपक की पूजा र दें।
(जल-रोली-अक्षत-फूल-नैवेद्य-आचमन-दक्षिणा चढ़ा दें)। ॐ प्रार्थना करें -

॥ ओम् नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूत प्रेत गणाधिप।
पूजां बलिं गृहाणेयं सौम्यो भवतु सर्वदा॥
आयु रारोग्यं मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।
मा विघ्नं मास्तु मे पापं मासन्तु परिपन्थिनः॥
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामाँश्च देहि मे।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत प्रेताः सुखावहाः॥

- ॐ हाथ में जल लेकर निम्न वाक्य कहें -

॥ ओम् क्षेत्रपालाय शाकिनी-डाकिनी-भूत-प्रेत-बेताल-पिशाच सहिताय
इमं बलिं समर्पयामि। भो क्षेत्रपाल! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य
सपरिवारस्य आयुःकर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्तिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो
भव।

११२

- ॐ हाथ का जल दीपक के सामने छोड़ दे।
ॐ नाई या नौकर पत्तल सहित दीपक को उठाकर यजमान के ऊपर पीठ की ओर से ३ बार उतार
कर घर से बाहर ले जाकर दीपक को रख दे। हाथ पाव धोकर घर में आवे।
ॐ नाई दीपक ले जाने लगे तो यजमान उसके ऊपर पीली सरसों छिड़क दे मंत्र पढ़े -

॥ ओम् भूताय त्वा नारातये स्वरभि विर व्येषं दृ ॐ हन्ता दुर्याः। पृथिव्या
मुर्वन्त रिक्ष मन्वेमि। पृथिव्यास्त्वा नामौ सादयाम्य दित्या उपस्थेऽने हव्य ॐ
रक्ष।

- ॐ यजमान तीन बार आचमन कर ले।
ॐ स्विष्टकृत हवन - घी की १ आहुति बताशा या लड्डू के साथ दे -
॥ ओम् अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

- ॐ पूर्णपात्र दान - चावल भर कर रखा हुआ पूर्णपात्र दक्षिणा के साथ संकल्प करे -
॥ अद्य कृतस्य अस्य कर्मणः सिध्यर्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापतिदेवतं
ब्रह्मणे दातुमहमत्सृजे॥

११३

- ब्रह्मा की गांठ खोल दे - कुशा में गांठ लगा कर जो रखा है उस गांठ को खोल दे।
- जल छिड़के - प्रणीता पात्र के जल को पवित्रद्वय से अपने ऊपर छिड़के।

॥ ओम् सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु ॥

- प्रणीतापात्र ईशान दिशा में उलट दे ॥ मंत्र पढ़े।

॥ ओम् दुर्मित्रियास् तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ॥

- प्रणीता पात्र उलटने के बाद उससे गिरे हुये जल को यजमान कुश पत्र द्वय से अपने ऊपर छिड़क ले-

॥ ओम् आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्त तमास् तास्ते कृणवन्तु भेषजम् ॥

- वेणीरूप उपयमन कुशा को अग्नि में डाल दे।

॥ पूर्णाहुति संकल्प ॥

- कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करे -

॥ अद्य गोत्रः नामाऽहम् मम मनोऽभिलषित धर्मार्थकामादि यथेप्सितायु
रारोग्यैश्वर्यं पुत्र पशु सखि सुहृत् सम्बन्धि बन्ध्वादि प्राप्तये ऽस्मिन् कर्मणि

११४

आवाहित देवतानां प्रीतये च दत्तैताभिः आहुतिभिः परिपूर्णाता सिद्ध्ये
पूर्णाहुति होमं च करिष्ये ॥

- पूर्णाहुति पूजन - १ नारियल में कलाई या लाल वस्त्र लपेटकर सामने रख कर पंचोपचार पूजन कर दे।

॥ ओम् पूर्णाहुत्यै नमः ॥

- नारियल के छेद में घी भर ले। खड़ा होकर अग्नि में सीधे खड़ा कर दे।

॥ ओम् पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत।

वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जं ॐ शतक्रतोः स्वाहा ॥

- वहिर्होम - जो कुशा वेदी के चारों ओर बिछाया है। उसी क्रम से उठाकर घी में बोर कर हवन अग्नि में डाल दे।

॥ ओम् देवागातु विदोगातुं वित्वा गातु मित।

मनसस्पत इमं देव यज्ञं ॐ स्वाहा-वातेधाः स्वाहा ॥

- वसोर्धारा-कटोरी में जो घी बचा है। उसे हवन कुण्ड में गिरा दे। मंत्र पढ़े -

११५

॥ ओम् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

○ भस्म लगाएँ (सुवा से हवन की राख लेकर अनामिका अंगुली से अपने लगा लें।)

माथ में - त्र्यायुषं जमदग्नेः।
ग्रीवा में - कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
दक्षिया बाहु में - यद्-देवेषु त्र्यायुषम्।
हृदय में - तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।

○ तर्पण-मर्जन करे -

○ तर्पण - हवन सामग्री (शाकल्य) वाले (थाली-परात) पात्र में थोड़ा सा दूध जल लेकर - कुशा से
बोर-बोर कर इस जल को अग्नि पर २८ बार गायत्री मंत्र से छिड़के - ○ मंत्र -

ओम् भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् - तर्पयामि।

○ मार्जन - इसी तरह थाली का जल कुशा से बोर-बोर कर २८ बार अग्नि पर छिड़के। ○ मंत्र -

११६

ओम् भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो योनः प्रचोदयात् - मार्जयामि।

- संश्रव प्राशन - प्रोक्षणी का जल (जिसमें हवन के बाद १-१ बूँद घी छोड़ा है) उस जल को अनामिका अंगुली से छूकर अपने मुख में (ओंठ में) लगा ले।
- हाथ धोकर आचमन कर ले।
- इसके बाद - अपने सामने जलदार एक नारियल रख ले। नारियल में स्वस्तिक बना दे। रक्षासूत्र लपेट दें -
- नारियल के उत्तर रक्षासूत्र बाँधकर एक खड्ग रख दे।
- नारियल तथा खड्ग की पूजा कर दे। रोली, अक्षत-फूल आदि चढ़ा दे।
- फूल लेकर प्रार्थना करे-

॥ ओम् नारिकेल बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः।

प्रणमामि ततः सर्व रूपिणं बलिरूपिणम्॥

चण्डिका प्रीतिदानेन दातुरापद् विनाशनम्।

चामुण्डा बलिरूपाय वले तुभ्यं नमोऽस्तु ते॥

११७

यज्ञार्थम् वलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य तस्माद् यज्ञे वधोऽवधः॥

- फूल नारियल पर चढ़ा दे।
- दूसरा फूल लेकर खड्ग की प्रार्थना करे -

॥ ओम् असिर्विशसनः खड्गस् तीक्ष्णधारो दुरासदः।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्म धारस् तथैव च॥
सर्व सत्त्वाङ्ग भूतासि सर्वाशुभ निवर्हिणी।
तीक्ष्ण धाराय शुद्धाय तस्मै खड्गाय ते नमः॥

- फूल खड्ग पर चढ़ा दे।
- मन में देवी जी का ध्यान करते हुए एक बार में खड्ग से नारियल को दो टुकड़ा कर दे।
- नारियल का जल देवी जी के आगे चढ़ा दे।
- दोनों टुकड़ा नारियल सामने रख दे।
- हाथ में जल लेकर नारियल के चारों ओर घुमाकर छोड़ दे।

११८

- फूल लेकर देवी जी की प्रार्थना करे -

॥ ओम् महिषघ्न महामाये चामुण्डे मुंड मालिनि।
आयुगारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते॥
रूपं देहि यशो देहि भर्गम् भगवति देहि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥

- देवी जी के आगे फूल छोड़कर प्रणाम कर ले॥

○

॥ कपूर की आरती करे॥

- १ थाली में चावल रखकर उस पर कपूर जलाकर रखे, खड़ा होकर आरती करे।
ओम् चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्नि रजायत।
ओम् कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयार विन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

११९

ओम् भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

- चारों ओर घूम कर सभी वेदी पर आरती कर दें।
- आरती की थाली जमीन पर रख कर जल छोड़ दें।
- द्रव्य छोड़कर सब लोग आरती ले लें।
- पुष्पाञ्जलि - हाथ में फूल लेकर प्रार्थना करे -

ओम् यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवस्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः॥

- (१) ओम् राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वै श्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वै श्रवणो दधातु॥
कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः॥

- (२) ओम् स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वै राज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज
माधिपत्यं मयं समन्त पर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्ता दा परार्थात्॥

१२०

पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो
मरुतस्याऽवसन् गृहे॥

- (३) ओम् विश्व तश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहु रुत विश्व तस्यात्।
सम्वाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देव एकः॥
- प्रदक्षिणा - हाथ में फूल लेकर वेदी के चारों ओर ३ बार परिक्रमा करे - फूल पीठ पर चढ़ा दे।
॥ ओम् यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि-तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणि पदे-पदे॥

अभिषेक

- यजमान की पत्नी यजमान की बायीं ओर बैठ जाय।
- ब्राह्मण पाँचों कलश से थोड़ा-थोड़ा जल एक पात्र में निकाल कर कुशा से यजमान पर छिड़के
(यजमान अपने पुत्र-पौत्रों को भी साथ बिठा ले - देशाचार है।)

१२१

- (१) ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर् यन् त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्ये नाभिं चिंचामि।
- (२) ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर् बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर् यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्ये नाभिं चिंचामि।।
- (३) ओम् देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर् बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अश्विनोर् भैषज्येन तेजसे ब्रह्म वर्चसा याभिं चिंचामि।
सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यां यान् नाद्या याभिं चिंचामीन्द्रस्य इन्द्रियेण बलाय
श्रियै यशसेऽभिचिंचामि।।
- (४) ओम् आपा हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।
- (५) ओम् योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः। उशती रिव मातरः।
- (६) ओम् तस्माऽअरङ्गं माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जन यथाचनः।
- तिलक-आशीर्वाद - ब्राह्मण यजमान के माथे में तिलक-अक्षत लगावे। ○ तिलक मंत्र -

१२२

ओम् आदित्यादि ग्रहाः सर्वे नक्षत्राणि सराशयः।

तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थं सिद्ध्ये।।

- रक्षासूत्र बाँधे - यजमान के दाहिने हाथ में - यजमानपत्नी के बाएँ हाथ में कलाई बाँधे। ○ मंत्र -

ओम् येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।

तेन त्वां प्रति वध्नामि रक्षे माचल माचल।।

- यजमानपत्नी फिर यजमान के दाहिने आकर बैठ जाय।

॥ गोदानः॥

- यजमान कुश-अक्षत-जल तथा प्रत्यक्ष गौ के अभाव में निष्क्रय द्रव्य लेकर गोदान करे -

॥ अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः
सिद्ध्यर्थम् तत्सम्पूर्णफल-प्राप्त्यर्थम् च गोनिष्क्रय भूतम् इदं द्रव्यं गोत्राय
शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।।

- ब्राह्मण गोदान संकल्प लेकर कहे - ॥ स्वस्ति।।

- आचार्य दक्षिणा दान - कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर आचार्य की दक्षिणा संकल्प करे -

१२३

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः सिद्ध्यर्थम् फलावाप्तये च आचार्याय इमां मनसोद्दिष्टां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥

- ⊙ आचार्य दक्षिणा लेकर कहे - ॥ स्वस्ति ॥
- ⊙ भूयसी दक्षिणा - कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर भूयसीदान संकल्प करे -

॥ अद्य शुभपुण्यतिथौ गोत्र नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् इमां भूयसी दक्षिणां नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च विभज्य यथाकाले दातुमहमुत्सृजे ॥

- ⊙ किसी पत्ता पर द्रव्य रख दे, बाद में बाँटे।
- ⊙ ब्राह्मण भोजन संकल्प -

॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः समृद्धये यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। ताम्बूलं दक्षिणां च दास्ये ॥

टिप्पणी : कुमारी कन्या तथा सौभाग्यवती स्त्रियों को भी भोजन कराने तथा उन्हें वस्त्र आदि सौभाग्य वस्तुएँ देने का प्रावधान है।

- ⊙ उत्तर पूजन - यजमान गौरी-गणेश-कलश-नवग्रह चारों कोनों में स्थापित पीठ प्रधान देवता आदि सभी आवाहित देवताओं पर गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़कर उत्तर पूजन कर दे - ⊙ मंत्र -

ओम् आवाहित देवताभ्यो नमः। उत्तर पूजां गृह्णन्तु। प्रीयन्ताम्।

- ⊙ अग्नि विसर्जन - हवन वेदी के बाहर गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़कर प्रार्थना करे।

॥ ओम् गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।

यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।

- ⊙ क्षमा प्रार्थना - अक्षत-पुष्प लेकर प्रार्थना करे -

ओम् अपराध सहस्राणि क्रियन्ते ऽहर्निशं मया।

दासोऽय मिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।

तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष परमेश्वर।।

आयुर्विद्यां धनं दत्त यशः सौख्यं च पुष्कलम्।

पुत्रदार सुखं दत्त सर्वान् कामांश्च दत्त मे॥

⊙ हाथ का अक्षत-पुष्प गौर-गणेश आदि पर छोड़ दे

⊙ फूल लेकर देवी जी की प्रार्थना कर ले -

॥ ओम् उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस् त्वेमहे।

उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशुर्भवा सचा॥

॥ ओम् उत्तिष्ठ देवि चंडेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च।

कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह॥

⊙ फूल देवी जी पर चढ़ा दे।

⊙ अक्षत छोड़कर देवताओं का विसर्जन -

ओम् यान्तु देवगणाः सर्वे पूजा मादाय मामकीम्।

इष्ट काम समृद्धयर्थम् पुनरागमनाय च॥

१२६

⊙ पीठदान - कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर - नवग्रह, वास्तु, योगिनी, प्रधान देवता आदि की पीठ का संकल्प करे -

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ गोत्रः नामाऽहम् कृतस्य कर्मणः
समृद्धयर्थम् इमानि सोपस्करादि-सहितानि पीठादीनि सदक्षिणानि आचार्याय
गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

⊙ ब्राह्मण लेकर कहे - ॥ ओम् स्वस्ति॥

⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ त्रैलोक्य मातर्देवित्वं सर्वभूत दयान्विते।

दानेनानेन संतुष्टा सुप्रीता वरदा भव॥

ओम् प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।

स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

१२७

ओम् विष्णवे नमः। विष्णवे नमः। विष्णवे नमः॥

- फूल सामने भूमि पर छोड़ दे
- यजमान जिस आसन पर बैठा है, उसके नीचे दो बूँद जल छोड़ दे।
- इस जल को दाहिने हाथ से छूकर अपने माथे लगा ले।
- ब्राह्मण फूल-फल आदि लेकर यजमान तथा उसकी पत्नी को मंत्राक्षत दे -
ओम् श्रीर्वर्चस्व मायुष्य मारोग्य माविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं पुत्र पौत्र लाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः॥
- ओम् मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणा मुदयस्तव॥
- यजमान और पत्नी की जो गाँठ बांधी है, खोल दी जाय। यजमान उठकर ब्राह्मणों का पांव छुवे।
देशाचार में पत्नी गौर को सिन्दूर चढ़ाकर सोहाग लेती हैं।

॥ इति॥

○

१२८

॥ नवदुर्गा पूजन॥

- एक सफेद कपड़े पर रोड़ी या पीसी सूखी हल्दी से नव खाना बना ले। जैसे नवग्रह का कोष्ठक बनता है।
- प्रत्येक कोष्ठक में पीले रंग से रंग कर अक्षत पुंज रख दे।
- हाथ में जल-अक्षत लेकर संकल्प पढ़े -
॥ अद्य शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहम् अस्मिन् कर्मणि
नवदुर्गायाः पूजनं करिष्ये॥
- हाथ का जल-अक्षत सामने छोड़ दे।
- २-२ दाना अक्षत छोड़कर नवदुर्गा का आवाहन करे -
॥१॥ शैलपुत्री -

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम्॥

१२९

ॐ भूर्भुवः स्वः शैलपुत्रि! इहागच्छ इहतिष्ठ।
शैलपुत्र्यै नमः। शैलपुत्रीमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

॥२॥ ब्रह्मचारिणी -

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलुम्।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।
ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मचारिणि! इहागच्छ इहतिष्ठ ब्रह्मचारिण्यै नमः।
ब्रह्मचारिणीमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।।

॥३॥ चन्द्रघण्टा -

अण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपार्भटीयुता।
प्रसादं तनुतां मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता।।
ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रघण्टे इहागच्छ इहतिष्ठ चन्द्रघण्टायै नमः।।
चन्द्रघण्टामावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

१३०

॥४॥ कूष्माण्डा -

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डे इहागच्छ इहतिष्ठ, कूष्माण्डायै नमः।
कूष्माण्डामावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

॥५॥ स्कन्दमाता -

सिंहासनगता नित्यं पद्माञ्जितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी।।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमातः। इहागच्छ, इहतिष्ठ, स्कन्दमात्रे नमः।
स्कन्दमातरमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

॥६॥ कात्यायनी -

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्याद् देवी दानवघातिनी।।

१३१

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनि। इहागच्छ, इहतिष्ठ, कात्यायन्यै नमः।
कात्यायनीमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

॥७॥ कालरात्री -

करालरूपा कालाब्जसमानाकृतिविग्रहा।
कालरात्रिः शुभं दद्यात् देवी चण्डाट्टहासिनी।।
ॐ भूर्भुवः स्वः कालरात्रि। इहागच्छ इहतिष्ठ, कालरात्र्यै नमः।
कालरात्रीमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

॥८॥ महागौरी -

श्वेतहस्तिसमारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा।।
ॐ भूर्भुवः स्वः महागौरि! इहागच्छ इहतिष्ठ, महागौर्यै नमः।
महागौरीमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

१३२

॥९॥ सिद्धिदात्री -

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिदे। इहागच्छ इहतिष्ठ, सिद्धिदात्र्यै नमः।
सिद्धिदात्रीमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

○ पंचोपचार पूजन कर दे - जल, रोड़ी, सिन्दूर, अक्षत-पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, पान,
सुपारी, दक्षिणा चढ़ा दे।

○ हाथ में जल लेकर कहे -

॥ अनया पूजया नवदुर्गा देव्याः प्रीयन्तां न मम।।

○ हाथ का जल नवदुर्गा के सामने छोड़ दे।

○ फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ ओम् विद्युद्दाम समप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल खेट विलसद्भस्ताभिरासेविताम्।।

१३३

हस्तैश्चक्र गदाऽसिखेट विशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीम्।
विभ्राणापनलात्मिकां शशिधरां दुर्गाम् त्रिनेत्रां भजे॥

- ⊙ हाथ का फूल नवदुर्गा पर चढ़ा दे॥ प्रणाम कर ले॥

॥ अखण्डदीप पूजन॥

- ⊙ गौर-गणेश-कलश के समीप लाल रोड़ी से त्रिकोण बनाकर उसके बीच में "रं" लिख दे। --
- ⊙ इसके ऊपर २ दाना चावल रख दे।
- ⊙ त्रिकोण पर घी का एक दीपक जलाकर रख दे।
- ⊙ हाथ में जल लेकर कहे -

॥ ओम् शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मिन् कर्मणि शुभता
सिद्ध्यर्थम् अखण्डदीपं प्रज्ज्वालये॥

- ⊙ हाथ का जल दीपक के सामने छोड़ दे।
- ⊙ अक्षत लेकर आवाहन करे -

१३४

॥ ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥ सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः
सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

- ⊙ अक्षत दीपक के सामने छोड़ दे।
- ⊙ दीपक के सामने जल-गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़कर पूजा कर दे।
- ⊙ फूल लेकर प्रार्थना करे -

॥ ओम् सुप्रकाशो महादीप्तः सर्वतस्तिमिरापह।
स बाह्याभ्यन्तरः ज्योतिर् दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
भो दीप देव रूपस् त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव॥

- ⊙ फूल दीपक के पास छोड़ दे॥

॥ कुमारी पूजन॥

- ⊙ कुमारी पूजन नियम - नव कुमारी कन्याओं का तथा तीन वटुकों का पूजन करना चाहिए।

१३५

- कन्याएँ - क्रमशः २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १० वर्ष की होनी चाहिए। यदि उक्त वर्ष की कन्याएँ नहीं मिले तो दो वर्ष की कन्या का पूजन करे।
- इसी तरह यदि तीन वटुक नहीं मिलें तो एक ही वटुक की पूजा करे।
- अनुष्ठान प्रकाश के अनुसार कन्या के दाहिने एक वटुक कन्या के बाएँ एक वटुक तथा अपने सामने एक वटुक विठाना चाहिए। यदि एक ही वटुक है तो अपने सामने विठाए।

पूजन विधि -

- अपने सामने अष्टदल कमल बनाकर उसके ऊपर शुद्ध आसन बिछा दे।
- इसी आसन पर कन्या को विठाए।
- हाथ में अक्षत-जल लेकर संकल्प करे -

॥ अद्य शुभपुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं भगवती दुर्गा देवी प्रीत्यर्थम् कुमारी पूजां करिष्ये ॥

- हाथ का अक्षत-जल सामने भूमि पर छोड़ दे।
- फूल लेकर प्रार्थना करे -

१३६

॥ ओम् मंत्राक्षरमयीम् लक्ष्मीं मातृकारूप धारिणीम्।
नव दुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम् ॥

- फूल कन्या के सामने छोड़ दे।
- कन्या का पूजन करे -
- पाँव धो दे, (कहीं-कहीं गरम जल से पाँव धोने को लिखा है)
- रोली-हलदी-फूल-वस्त्र प्रदान करे।
- खीर-लड्डू, केला नारियल आदि भोजन के लिए दे।
- कन्या भोजन कर ले तब पान-दक्षिणा दे।
- फूल लेकर प्रार्थना करे -

१. कुमारी -

जगत् पूज्ये जगद्वन्द्वे सर्वशक्ति स्वरूपिणी।
पूजां गृहाण कौमारी जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥

१३७

अथवा - सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति स्वरूपिणी।
पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते॥

२. त्रिमूर्ति -

त्रिपुरां त्रिपुराधारां त्रिवर्ग-ज्ञान-रूपिणीम्।
त्रैलोक्य वन्दितां देवीं त्रिमूर्तिम् पूजयाम्यहम्॥

३. कल्याणी -

कलात्मिकां कलातीतां कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कल्याण जननी देवीं कल्याणीं पूजयाम्यहम्॥

४. रोहिणी -

अणिमादि गुणाधारामकाराद्यक्षरात्मिकाम्।
अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥

१३८

५. कालिका -

कामचारीं शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम्॥

६. चण्डिका -

चण्डवीर्याम् चण्डमयीम् चण्डमुण्ड प्रभञ्जनीम्।
ब्रह्मेश विष्णुनमितां चण्डिकां पूजयाम्यहम्॥

अथवा -

चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्ड प्रभञ्जनीम्।
पूजयामि सदा देवीं चण्डिकां चण्डविक्रमाम्॥

७. शाम्भवी -

सुखानन्दकरीं शांतां सर्वदेव नमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥

१३९

८. दुर्गा -

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गाम् दुर्गार्तिनाशिनीम्॥

९. सुभद्रा -

सुन्दरीम् स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्॥

○ फूल कन्या पर चढ़ाकर प्रणाम कर ले॥

॥वटुक पूजन॥

○ अक्षत-पुष्प लेकर वटुक की प्रार्थना करे -

॥ कर कलित कपालः कुण्डली दण्डपाणिः।
तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती॥
क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतुः
जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्॥

१४०

○ अक्षत-पुष्प वटुक पर चढ़ा दे।

○ वटुक की पूजा कर दे। भोजन करा दे। पान-दक्षिणा दे दे॥

॥विशेष द्रव्य से विशेष आहुति॥

○ शास्त्रों में दुर्गासप्तशती के प्रत्येक श्लोक से आहुति देने का प्रावधान है।

○ दुर्गा उपनिषद् कल्पद्रुम में कुछ विशेष श्लोकों से विशेष द्रव्य की आहुति देने को लिखा है, जो इस प्रकार है -

प्रथम अध्याय के - निम्न श्लोक से शर्करा की आहुति दे

○ एक पान पर शर्करा-घी-लौंग-इलायची लेकर निम्न श्लोक पढ़कर आहुति दे -

॥१॥ बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।

तया विसृज्यते विश्वं जगदे तच्च चराचरम्॥ स्वाहा॥ ५६॥

॥२॥ निम्न मंत्र से कमलगट्टा की आहुति दे -

॥ आस्तीर्य शेषमजभत् कल्पान्ते भगवान् प्रभुः।

तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ॥ स्वाहा॥ ६७॥

१४१

॥३॥ निम्न मंत्र से कपूर की आहुति दे -

॥ ओम् वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत्। स्वाहा॥१००॥

॥४॥ निम्न मंत्र से फिर कमलगट्टा की आहुति दे -

॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः।

आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता॥ स्वाहा॥१०१॥

॥५॥ निम्न मंत्र से मधु-केला-गुग्गुल-सोंठ-पान की विशेष आहुति दे -

॥ तथेत्युक्त्वा भगवता शंख चक्र गदाभृता।

कृत्वा चक्रेण वैच् छिन्ने जघने शिरसी तयोः॥१०३॥

○ प्रथम अध्याय के अंत में मधु-मुलेठी-पुष्प की आहुति दे -

॥ ओम् सांगायै-सपरिवारायै-सशक्तिकायै-सायुधायै-सवाहनायै-वाग्भव
वीजाधिष्ठातृ महाकाल्यै नमः स्वाहा॥

○

१४२

॥ द्वितीय अध्याय के -

॥१॥ ॥ अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेदां च दंशनम्।

अम्लान पङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम्॥१८॥

- इस मंत्र से कपूर की आहुति दे।

॥२॥ श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस् त्रिदशार्दनाः।

केषां चिद् वाहवश् छिन्नाश् छिन्न ग्रीवास्तथापरे॥६०॥

- इस मंत्र से सरसों की आहुति दे।

॥३॥ क्षणेन तन् महा सैन्य मसुराणां तथाम्बिका।

निन्येक्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम्॥६७॥

- इस मंत्र से राई की आहुति दे।

॥४॥ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः।

यथैषां तुष्टुर्वेदाः पुष्पवृष्टि मुचो दिवि॥६९॥

- इस मंत्र से पुष्प तथा वेलपत्र की आहुति दे।

१४३

- ० द्वितीय अध्याय के अन्त में एक लौंग एक इलायची तथा गुग्गुल की आहुति दे -

॥ ओम् ह्रीम् सांगायै सायुधायै सशक्तिकायै
सपरिवारायै सवाहनायै श्री महालक्ष्म्यै
अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै
महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा॥

०

- ॥ तृतीय अध्याय में -

- ० निम्न मंत्र से कागजी नींबू की आहुति दे -
बिडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम्॥२०॥
- ० निम्न मंत्र से गुड़ और दूध मिलाकर उसकी आहुति दे -
ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना॥३४॥

१४४

- ० निम्न मंत्र शहद की आहुति दे -
गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः॥३८॥
- ० निम्न मंत्र से लौकी की आहुति दे -
अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः॥४२॥

- ० निम्न मंत्र से पान-सुपारी की आहुति दे -
तुष्टवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरो गणाः॥४४॥

- ० तृतीय अध्याय के अंत में - उरद, दही, गुग्गुल की एक आहुति दे -

॥ ओम् सांगायै-सपरिवारायै-सशक्तिकायै-सायुधायै-सवाहनायै
अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा॥

०

१४५

॥ चतुर्थ अध्याय में -

○ निम्न मंत्र से केला की आहुति दे -

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः॥३॥

○ निम्न मंत्र से वेल की आहुति दे -

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या॥७॥

१४६

○ निम्न मंत्र से सफेद चंदन की आहुति दे -

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मुखेषु देवि।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च॥८॥

○ निम्नमंत्र से कपूर की आहुति दे -

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा॥११॥

○ निम्न मंत्र से शरीफा की आहुति दे -

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा।

१४७

नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-

मस्माकमुन्दमदसुरारिभवं नमस्ते॥२३॥

- निम्न मंत्र से लाल चंदन की आहुति दे -
एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः॥२९॥
- निम्न मंत्र से धूप की आहुति दे -
भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान्प्रणतान् सुरान्॥३०॥
- निम्नमंत्र से काली तिल-धूप-शहद तीनों मिलाकर आहुति दे -
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी।
तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते॥ ह्रीं ॐ॥४२॥
- चतुर्थ अध्याय के अंत में - खीर, पूड़ी की आहुति दे -

१४८

(पूजा कर्म प्रदीप में घी, खीर, हलुवा की आहुति लिखी है)

दुर्गार्चन स्मृति में मिश्री-खीर-गूगुल की आहुति लिखी है।

॥ ओम् जयन्ती सांगायै-सायुधायै-सशक्तिकायै-सपरिवारायै-सवाहनायै
त्रिवर्णात्मिकायै त्रिशक्त्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा॥

○

॥ पंचम अध्याय में -

- निम्न मंत्र से हलुवा की आहुति दे -
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥९॥
- निम्न मंत्र से आंवला की आहुति दे -
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः॥१०॥

१४९

- ० निम्न मंत्र से भोजपत्र की आहुति दे -
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः।
नैऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥११॥
- ० निम्न मंत्र से कमलगट्टा की आहुति दे -
निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात्।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम्॥१६॥
- ० निम्न मंत्र से काजल की आहुति दे -
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पम् व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥१२०॥
- ० निम्नमंत्र से हींग की आहुति दे -
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु॥१२१॥

- ० निम्नमंत्र से पान-सुपारी तथा ईख का टुकड़ा की आहुति -
स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत्॥ ॐ॥ १२९॥
- ० पंचम अध्याय के अंत में - सफेद चंदन, वेल, वेलपत्र, कपूर तथा ऋतुफल की आहुति दे -
॥ ओम् सांगायै-सायुधायै-सशक्तिकायै-सपरिवारायै-सबाहनायै धूम्राक्ष्यै
विष्णुमायादि चतुर्विंशति देवताभ्यो नमः स्वाहा॥

०

॥ षष्ठ अध्याय में -

- ० निम्नमंत्र से गूगुल की आहुति -
हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः।
तामानयबलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम्॥४॥
- ० निम्नमंत्र से विजौर नींबू (मीठा नींबू) का आहुति -

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः।
हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः॥१३॥

- निम्नमंत्र से केशर की आहुति -
विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः॥१८॥
- निम्नमंत्र से राई की आहुति -
क्षणेन तद्बलं सर्वम् क्षयं नीतं महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना॥१९॥
- निम्नमंत्र से सुपारी, कमलगट्टा तथा लोहवान की आहुति -
श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम्।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः॥२०॥
- निम्नमंत्र से भोजपत्र की आहुति -

केशेष्वकृष्य बद्ध्वावायदि वः संशयो युधि।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम्॥२३॥

- निम्नमंत्र से ईख का टुकड़ा तथा कनेर का फूल मिलाकर आहुति -
तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते।
शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॐ॥२४॥
- षष्ठ अध्याय के अंत में - भोजपत्र तथा कूष्माण्ड की आहुति दे -
॥ ओम् क्लीम् सांगायै-सायुधायै-सशक्तिकायै-सपरिवारायै-सवाहनायै
धूम्राक्ष्यै शक्त्यै नमः स्वाहा॥
- ॥ सप्तम अध्याय में -

- निम्नमंत्र से कस्तूरी की आहुति -
ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्द्रति।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा॥५॥

- निम्नमंत्र से केला की आहुति -
उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत।
गृहीत्वाचास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥२०॥
- निम्नमंत्र से विजौरा नींबू (मीठा नींबू) की आहुति -
शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च।
प्राह प्रचण्डादृहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥२३॥
- निम्नमंत्र से कमलगट्टा की आहुति -
तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥२६॥
- निम्नमंत्र से चिरौंजी की आहुति -
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॥ ॐ ॥२७॥

- सप्तम अध्याय के अंत में - जायफल-चिरौंजी, मिश्री मिलाकर एक आहुति दे -
॥ ओम् सांगायै-सपरिवारायै-सायुधायै-सवाहनायै-सशक्तिकायै कर्पूर
बीजाधिष्ठात्र्यै काली चामुण्डायै नमः स्वाहा ॥

○

॥ अष्टम अध्याय में -

- निम्नमंत्र से सरसों की आहुति -
इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान्।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥३९॥
- निम्नमंत्र से लाल चन्दन की आहुति -
रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥४१॥
- निम्नमंत्र से लाल चन्दन की आहुति -

भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम्॥५६॥

- निम्नमंत्र से लाल चन्दन की आहुति -
मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम्।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम्॥५७॥
- निम्नमंत्र से ईख की आहुति -
तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिरऋष्टिभिः॥६०॥
- निम्नमंत्र से लाल चंदन की आहुति -
जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम्।
स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः॥६१॥
- निम्नमंत्र से विजोरा नींबू की आहुति -

नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप॥६२॥

- अष्टम अध्याय के अंत में - लाल चंदन-शहद-घी की एक आहुति दे -
॥ ओम् सांगायै-सायुधायै-सशक्तिकायै-सपरिवारायै-सवाहनायै अष्टमात्
सहितायै रक्ताक्ष्यै नमः स्वाहा॥

○

॥ नवम अध्याय में

- निम्नमंत्र से विजोरा नींबू की आहुति -
विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम्॥२॥
- निम्नमंत्र से 'कपीठ' (जिसे चूक अमचुर कहते हैं) की आहुति -
ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले॥१६॥

- निम्नमंत्र से केशर की आहुति -
 पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च।
 समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधाधिना॥२०॥

- निम्नमंत्र से विजौरा नींबू की आहुति दे -
 भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः।
 महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वद॥३५॥

- निम्नमंत्र से कण - गुगुल-इन्द्रयव की आहुति दे -
 (कण का अर्थ है - मोती का दाना अथवा चावल का टुकड़ा)
 (इन्द्रयव का अर्थ है - कुटज का फूल जिसे कोरैया कहते हैं)
 इन्द्रयवं कुटजफलम् - "इन्द्रसंज्ञस्यफलम्" कौटजः कुटजः कोरी - "कोरैया" - ये सब नाम
 अमरकोष में दिये गये हैं) कहीं-कहीं कुटज को "कुटजार्जुनभूरुहोः" "कुटजो वृक्ष भेदेस्यादगस्त्य
 द्रोणयोरपि" कहा गया है। सामान्यतया इन्द्र संज्ञस्य वृक्षस्य यवम् फलम् "अर्थात् इन्द्र नामक
 वृक्ष का फल अर्थात् कोरैया का फूल ही ग्रहण किया जाता है।

- तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः।
 शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि॥३६॥

- निम्नमंत्र से पान-सुपारी-वेलगिरी (वेल का गूदा) की आहुति -
 ॥ केचिद् विनेशुरसुराः केचिन् नष्टा महाहवात्।
 भक्षिताश्चापरे काली शिवदूती मृगाधिपैः॥४१॥

- नवम अध्याय के अन्त में - एक पान पर शाकल्य, कमल गट्टा, लौंग, छोटी इलायची, सुपारी, १
 वेल, १ नींबू विजौरा एक जावित्री रखकर सब पर घी छोड़कर एक आहुति दे -

॥ ओम् क्लीम् जयन्ती सांगायै-सायुधायै-सशक्तिकायै-सपरिवारायै-
 सवाहनायै भैरव्यै तारादेव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः॥ स्वाहा॥



॥ दशम अध्याय में -

- निम्नमंत्र से केशर-कस्तूरी की आहुति दे -

॥ निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राण सम्मितम्।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः॥२१॥

○ निम्नमंत्र से पंका केला की आहुति दे -

तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्।

जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि॥२६॥

○ निम्नमंत्र से भोजपत्र की आहुति दे -

स गतासुः पपातोर्व्या देवीशूलाग्रविक्षतः।

चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम्॥२७॥

○ निम्नमंत्र से वरगद के पत्ता में रखकर इन्द्रियव तथा कमलगट्टा की आहुति दे -

जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्तादिगजनितस्वनाः॥३२॥

○ दशम अध्याय के अंत में - कस्तूरी तथा वेलफल की आहुति दे -

॥ ओम् सांगायै-सायुधायै-सशक्तिकायै-सपरिवारायै-सवाहनायै

१६०

सिंहासनाधिष्ठात्र्यै त्रिशूलधारिण्यै देव्यै नमः स्वाहा॥

॥ एकादश अध्याय में -

○ निम्नमंत्र से विजौरा नींबू की आहुति -

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।

सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥५॥

○ निम्नमंत्र से राई-काली मिर्च तथा गिलोय की आहुति -

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयान्ति॥२९॥

○ निम्नमंत्र से कालीमिर्च की आहुति -

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।

एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्॥३९॥

१६१

- निम्नमंत्र से सरसों की आहुति -
वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ॥४१॥
- निम्नमंत्र से अनार का फूल तथा अनार दाना की आहुति -
भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान्महासुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः॥४४॥
- निम्नमंत्र से मजीठ की आहुति -
ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम्॥४५॥
- निम्नमंत्र से छोटी वाली नारंगी की आहुति -
भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा॥४६॥

- निम्नमंत्र से कमलगट्टा की आहुति -
ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः॥४७॥
- निम्नमंत्र से सोवा-पालक की आहुति -
शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम्॥४९॥
- निम्नमंत्र से कालीमिर्च की आहुति -
॥ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थं यदा-यदा वाधा दानवोत्था भविष्यति॥५४॥
- निम्नमंत्र से पीली सरसों की आहुति दे -
॥ तदा तदा वतीर्याहं करिष्याम्यरि संक्षयम्॥५५॥

- ॐ अध्याय के अंत में - कपूर, खीर तथा गोड़हर का लाल फूल की आहुति दे -
 ॥ ओम् क्लीम् जयन्ती सांगायै-सायुधायै-सशक्तिकायै सपरिवारायै-
 सवाहनायै-लक्ष्मी वीजाधिष्ठात्र्यै गरुडवाहिन्यै नारायणि देव्यै नमः स्वाहा ॥

ॐ

॥ द्वादश अध्याय में -

- ॐ निम्नमंत्र से अगर की आहुति दे -
 एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।
 तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥२॥
 ॐ इस मंत्र से गौ-दूध के पेडा से आहुति दे -
 बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे।
 सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्य श्राव्यमेव च ॥१०॥
 ॐ निम्नमंत्र से छोटी इलायची की आहुति दे -

१६४

- सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
 मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥१३॥
 ॐ निम्नमंत्र से भोजपत्र की आहुति दे -
 उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः।
 दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥१७॥
 ॐ निम्नमंत्र से लौंग, वीजौरा नींबू, फूल तथा कपूर की आहुति -
 सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम्।
 पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥२०॥
 ॐ निम्नमंत्र से सर्वौषधि या सतावर की आहुति दे -
 पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत।
 तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा ॥३३॥
 ॐ निम्नमंत्र से अनार का दाना तथा छिलका की आहुति -

१६५

सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी॥३९॥

○ निम्नमंत्र से फूल, धूप की आहुति दे -

स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादिभिस्तथा।
ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॐ॥४१॥

○ अध्याय के अंत में सफेद तिल, सफेद फूल, केशर, कपूर की आहुति दे -

॥ ओम् सांगायै-सायुधायै-सशक्तिकायै-सपरिवारायै-सवाहनायै-श्रियै
त्रिपुरसुन्दर्यै महावैष्णव्यै देव्यै नमः स्वाहा॥

○

॥ त्रयोदश अध्याय में -

○ निम्नमंत्र से गुड़ तथा पुष्प की आहुति दे -

ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम्।
एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः॥१२॥

○ निम्नमंत्र से काली मिर्च की आहुति दे -

ततो वब्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि।
अत्रैव च निजं स्रज्यं हत शत्रुबलं बलात्॥१७॥

○ निम्नमंत्र से पान-सुपारी की आहुति दे -

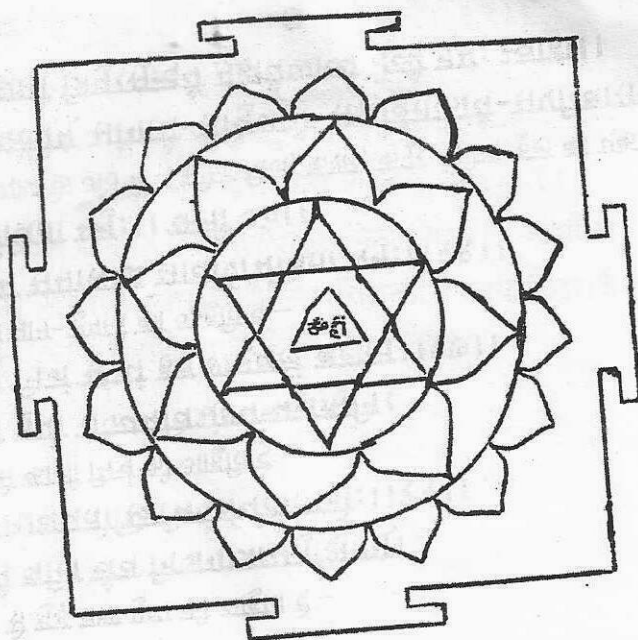
सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः॥२९॥
सावर्णिर्भविता मनुः॥ क्लीं ॐ॥

○ त्रयोदश अध्याय के अंत में - सफेद तिल, केशर, कपूर, सफेद फूल की एक आहुति दे -

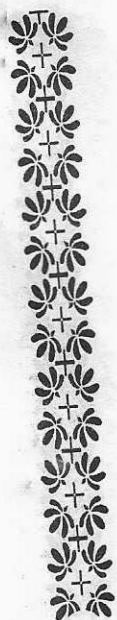
॥ ओम् क्लीम् सांगायै-सायुधायै-सशक्तिकायै-सपरिवारायै-सवाहनायै
श्री विद्यायै त्रिपुरसुन्दर्यै महावैष्णव्यै देव्यै नमः स्वाहा॥

○

शतचण्डी प्रयोग पद्धति



॥ श्री देवीयन्त्रम् ॥



१६८

151221/1



8 71065

4056

अस्यां मूर्त्तौ सर्वेन्द्रियाणि-वाङ्-मनः-त्वक्-चक्षुः-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-
पाद-पायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥३॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च॥

अस्यै देवत्वमर्चायै माम हेतु च कश्चन॥

- हाथ का फूल गौर-गणेश के पास रख दे।
- प्रतिमा को ताम्रकलश के ऊपर स्थापित कर दे।
- एक दूसरा फूल लेकर निम्नलिखित मंत्रों से स्थापना करे ॥ मंत्र पाठ करे॥

ओम् अयम्पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती
गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपा ॐ शुरुपा ॐ शोस्त्रिवृत् त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ
ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया प्राणम् गृह्णामि प्रजाभ्यः॥१॥

ओम् अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्व कर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्
ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वार ॐ स्वारा दन्तर्यामोऽन्तर्यामात् पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहद्
भरद्वाज ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः॥२॥

१८

ओम् अयंपश्चाद् विश्व व्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्व व्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती
वार्षी जगत्या ऋक् सममृक् समाच्छुक्रः शुक्रात् सप्तदशः सप्तदशाद् वैरूपं
जमदग्निर् ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया चक्षुर् गृह्णामि प्रजाभ्यः॥३॥

ओम् इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत ॐ सौव ॐ शरच्छ्रौत्र्य नुष्टुपशारद्यनुष्टुभ
ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एक वि ॐ श एक वि ॐ शाद् वैराजम् विश्वामित्र
ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः॥४॥

ओम् इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्मात्या हेमन्तो वाच्यः पंक्तिरहैमन्ती पंक्त्यै
निधनवन्निधनवत आग्रयण-आग्रयणात् त्रिणव त्रयस्त्रि ॐ शौ त्रिणव त्रयस्त्रि
ॐ शाभ्या ॐ शाक्वर रैवते विश्वकर्म ऋषिः प्रजापति गृहीतया त्वया वाचं
गृह्णामि प्रजाभ्यः॥५॥

प्रतिष्ठा मन्त्र -

ओम् मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ॐ
समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठा॥

१९